पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2014-16

ओ३म्

कृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-१६, अंकः-१२,१; जून-जुलाई, सन्-२०१४, सं०-२०७१ वि०, दयानंदाब्द १६१, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११५; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

प्रसंगवश

'नमस्ते' को राष्ट्रीय अभिवादन घोषित करें

इसमें बसी है हमारी संस्कृति की सुगंध

प्रबल बहुमत से निर्वाचित प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने नवनिर्वाचित सांसदों को नसीहत के रूप में जो पहला फरमान जारी किया है; वह है- 'सांसद गण पैर छूने की प्रवृत्ति का परित्याग करें- चाटुकारिता के स्थान पर श्रमशीलता और कर्त्तव्य परायणता के आधार पर अपना स्थान बनायें।' इसी प्रकार की सलाह राजनेताओं को एक बार लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने भी दी थी। इससे पूर्व १९७५-१९७७ आपात्काल पर अगर नजर दौड़ायें तो चाटुकारिता और चमचागीरी की प्रवृत्ति इस कदर बढ़ गई थी कि उस समय के एक मुख्यमंत्री को एक जनसभा की समाप्ति पर श्री संजय गांधी के पैरों में जूते तक पहनाते हुए देखा गया। आज भी कुछ नेतागण अपने अधीनस्थ आई, पी.एस., आई.ए.एस. अधिकारियों से चरण स्पर्श पाकर पुलकित होते देखे जाते हैं; किन्तु यह परम्परायें कभी भी एक स्वच्छ और संतुलित प्रशासन नहीं दे सकतीं। वर्तमान में प्रचलित शासन तंत्र के इन्हीं दोषों को देखकर कदाचित् मोदी जी ने यह दिशा-निर्देश देने का साहस किया है। महाभारत कार का कथन है-

पुरुषाः बहवो राजन् सततं प्रियवादिनः
अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।

"हे राजन्! निरन्तर प्रिय चर्चाएँ करने वाले पुरुष तो बहुत से मिल जाते हैं किन्तु अप्रिय लगने वाली हितकारिणी चर्चाएँ करने वाले तथा उनको श्रवण करने वाले दोनों ही दुर्लभ हैं।" मोदी जी ने जो फरमान जारी किया है; वह कुछ लोगों को भले ही अप्रिय प्रतीत हो किन्तु राष्ट्र के व्यापक हित में वह कल्याण प्रद है; इसमें कोई संदेह नहीं है।

प्रश्न यह है कि अगर नेतागण चरण स्पर्श न करें तो अभिवादन की कौन सी प्रक्रिया अपनायें। उत्तर अत्यंत स्पष्ट है। हमारे पास 'नमस्ते' जैसा सर्वप्रिय सर्वगुण सम्पन्न अभिवादन मौजूद है; जिसका आज देश में ही नहीं, विश्व में डंका बज रहा है। कोई भी विदेशी नेता यदि भारत आता है- तो वायुयान के दरवाजे पर खड़े होकर सर्वप्रथम हाथ जोड़कर 'नमस्ते' करते ही मिलता है।

आसेतु हिमांचल तथा कच्छ से कटक तक सम्पूर्ण भारत वर्ष में 'नमस्ते' प्रचलित है। भारत की सीमाओं से बाहर नेपाल का यह राष्ट्रीय अभिवादन घोषित है और अमेरिका, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया से लेकर मलेशिया, सिंगापुर, श्रीलंका, बांग्लादेश इत्यादि अन्य देशों में भी; जहाँ भारतवंशी हैं, 'नमस्ते' का बोलबाला है।

लोकजीवन का अभिन्न अंग है-नमस्ते। अभी कुछ वर्ष पहले एक बहुत ही लोकप्रिय हिन्दी फिल्म बनी थी- 'नमस्ते लंदन'। भारत ही नहीं सात समुंदर पार लंदन तक 'नमस्ते' से सुरभित और सुवासित है। इससे पहले 'नमस्तेजी' नाम से एक फिल्म बनी थी, इस फिल्म में एक बड़ा ही प्यारा गीत था- "चाहे सुख हो, चाहे दुख हो, रहिए हंसते जी, नमस्ते जी, नमस्ते जी।"

नमस्ते एक ऐसा अभिवादन है, जिसका छोटे, बड़े सभी सामान्य रूप से व्यवहार करते हैं। समान आयु के लोग कहते हैं बंधुवर नमस्ते, प्रियवर नमस्ते; छोटे बड़ों से कहते हैं दादाजी नमस्ते, पिताजी नमस्ते, श्रद्धेय पिताजी, सादर नमस्ते; पिता पुत्र को कहता है- प्रिय पुत्र नमस्ते। माई डियर नमस्ते, माई डार्लिंग नमस्ते। नमस्ते हर जगह फिट है।

सन् १९३३ में शिकागो (अमेरिका) की धरती पर आयोजित विश्वधर्म सम्मेलन में जहाँ सभी देशों के आये धर्म प्रतिनिधियों ने यह तय किया कि प्रतिनिधिगण एक ही अभिवादन का प्रयोग सम्मेलन के दौरान करें। सभी प्रतिनिधियों से कहा गया कि वे अपने अपने अभिवादन की श्रेष्ठता प्रतिपादित करें; जो अभिवादन श्रेष्ठतम होगा, वही सम्मेलन के दौरान सभी लोग व्यवहार में लायेंगे। इस सम्मेलन में भारतीय धर्म प्रतिनिधि थे- पं.अयोध्या प्रसाद वैदिक रिसर्च स्कालर (कोलकाता)। अयोध्या प्रसाद जी ने 'नमस्ते' की विशेषताओं का वर्णन करते हुए बताया कि यही अभिवादन ऐसा है जिसमें Three-'H' का समावेश है। तीन 'एच' अर्थात् 'हेड', 'हैंड', 'हार्ट'। दोनों हाथ जोड़े जाते हैं, उन्हें हृदय से लगाते हैं और फिर हेड (सिर) को झुकाते हैं। विश्व के सभी धर्म प्रतिनिधियों ने 'नमस्ते' अभिवादन सर्व सम्मति से स्वीकार किया; और उसी का प्रचलन हुआ।

'नमस्ते' अभिवादन कोई नवीन आविष्कार नहीं है। वेद, उपनिषद्, पुराण, रामायण, महाभारत इत्यादि गंथों में बारबार 'नमस्ते' अभिवादन के रूप में प्रयुक्त होता आया है। यहाँ भारतीय संस्कृति धर्म और सभ्यता के आधार भूत ग्रंथों से कतिपय उद्धरण प्रस्तुत करना दिलचस्प होगा-

१.**यजुर्वेद**- ओं पिता नोऽसि पिता नो बोधि नमस्तेऽस्तु।। *(यजुर्वेद ३८/२०)*
ओं नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्चिषे।। *(यजु. ३६/२१)*

२.**तैत्ति.ब्राह्मण**-
क्षत्रं क्षत्रं वैश्रवणः। ब्राह्मणा वयं स्मः। नमस्तेऽस्तु।। *(तैत्ति.ब्रा. १/३१/३)*

३.**कठोपनिषद्**-
नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन्।। *(कठो. १/३)*

४.**वाल्मीकि रामायण**-
नमस्तेऽस्तु गमिष्यामि मैत्रेणेक्षस्व चक्षुषा।। *(वा. रा., बा.का. ५२/१७)*
मा हरोत्सृज काकुत्स्थौ नमस्ते राक्षसोत्तम।। *(वा. रा., अ.का. ४/३)*

५.**अध्यात्म रामायण**-
नमस्ते राम राजेन्द्र नमः सीतामनोरम।
नमस्ते चण्डकोदण्ड नमस्ते भक्तवत्सल।। *(अध्या. रा., यु.का.३/१७)*

६.**स्कंद पुराण**-
नमस्ते जानकीनाथ नमस्ते हनुमत्प्रिय।।१०।।
नमस्ते कौशिकमुनेर्यागरक्षणदीक्षित।।११।। *(स्कंद पुरा., ब्र.खं.वं.मा.अ.१८)*

७.**महाभागवत पुराण**-
सर्ववेदविदां श्रेष्ठ नमस्ते मुनिपुंगव।
त्वत्तोऽधिकतरो लोके वक्ता नास्ति महामते।। *(महाभागवत पु.२/२)*

८.**शिव पुराण**-
नमस्तेऽस्तु नमस्तेऽस्तु धन्यस्त्वं ब्रह्मवित्तमः।। *(शिव पु.उ.स.२८/२८)*

९.**कूर्म पुराण**-
नमस्तेऽस्तु महादेव नमस्ते परमेश्वर।।४४।।
नमः शिवाय देवाय नमस्ते ब्रह्मरूपिणे।।४५।। *(कूर्म पुराण)*

१०.**महाभारत**-
ज्येष्ठो राजन् वरिष्ठोऽसि नमस्ते भरतर्षभ।। *(महाभारत, स.प.८१/३)*
संजयोऽहं भूमिपते नमस्ते प्राप्तोऽस्मि गत्वा नरदेव पाण्डवान्।। *(महाभारत, उ.प.३८/८)*

महर्षि दयानन्द कृत 'आर्योद्देश्य रत्न माला' का १००वाँ रत्न है-'नमस्ते'- मैं तुम्हारा मान्य करता हूँ।

'नमस्ते' का 'नम' 'नमस्कार' में भी है, 'नमाज' में भी है और 'नमो' (नरेन्द्र मोदी) में भी है! नरेन्द्र मोदी को विजयी बनाने में उनके संक्षिप्त नाम 'नमो' शब्द की महती भूमिका रही है- नमस्ते उसी का पूर्णरूप (फुलफार्म) है।

सम्पूर्ण विश्व को अब यही बात बता देनी है कि अगर भारत के पास अमूल्य रत्न 'कोहिनूर' है, गंगा जैसी पवित्र नदी है, ताजमहल जैसा भव्य स्मारक है, वेद के रूप में ज्ञान की निधि है, गीता जैसी उद्बोधक रचना है; तो उसी भारत के पास 'नमस्ते' जैसा सर्वप्रिय अभिवादन भी है।

नरेन्द्र को नरेन्द्र बनाने वाले रा.स्व. संघ की श्रेष्ठतम कृति 'मातृभूमि वंदना' का प्रारम्भ और समापन दोनों ही 'नमस्ते' से होता है-

(प्रारम्भ) नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे!
(समापन) पतत्वेश कायो नमस्ते नमस्ते!

[संदर्भ ग्रंथ-'आर्य समाज कोलकाता का इतिहास'-उमाकांत उपाध्याय; 'नमस्ते प्रकाशिका'-मुनीश्वरानन्द सरस्वती]

(आर्य लोक वार्ता' न्यूजडेस्क)

विनय पीयूष

कभी किसी का मान न तोड़ूँ !

नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो
नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्यः।
यजाम देवान् यदि शक्नवाम,
मा ज्यायसः शंसमा वृक्षि देवाः।।

(ऋग्वेद 1/27/13)

कभी किसी का मान न तोड़ूँ !

नमन बड़ों को,
औ' छोटों को;
नमन युवाओं को,
वृद्धों को।

देवों का सत्कार शक्तिभर,
अग्रज का गुणगान न छोड़ूँ!

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

प्रथम प्रतिश्रुति

प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के साथ ही श्री नरेन्द्र ने जो देश की जनता को पहला संदेश दिया है; वह काफी सुखद और रामराज्य की दिशा में प्रयाण का संकेत है। श्री नरेन्द्र ने यह संदेश बाराबंकी की नवनिर्वाचित सांसद सुश्री प्रियंका रावत के माध्यम से दिया है। देश में अबतक राजनीतिक क्षेत्र में प्रथा प्रचलित है; उसके अनुसार सुश्री प्रियंका जी ने सांसद को मिले हुए विशेषाधिकारों के तहत अपने निजी सचिव/जनसम्पर्क अधिकारी के पद पर अपने पिताजी को नियुक्त कर दिया। अबतक ऐसा ही होता आया है। राजनीतिक पद रोजी रोटी कमाने अथवा अकूत सम्पदाओं के भंडारण का स्रोत माना जाता है। हर जन प्रतिनिधि अपने घरवालों और फिर नातेदारों, रिश्तेदारों को लाभान्वित करने की चिन्ता में रहता है; उसे किसी सुव्यवस्था अथवा जनसामान्य की सुविधाओं से कोई लेनादेना नहीं रहता है। नेताओं के घर चमचमाते हैं; किन्तु मोहल्ले की गलियाँ उखड़ी पुखड़ी रहती हैं। गोमती नगर या इन्दिरा नगर की जिन गलियों या मार्गों से हम तीन वर्ष पहले गुजरते थे; वे वैसी ही जर्जर और टूटी फूटी हैं, मगर नेताओं के चेहरे जरूर चमकने लगे हैं। हालाँकि पार्षद, विधायक, सांसद सभी को जनकल्याणार्थ प्रभूत धनराशि मिलती है और उसका अगर तीनों मिलजुल कर योजनाबद्ध सदुपयोग करने लगें तो किसी भी मोहल्ले या क्षेत्र में न कहीं जलभराव हो और न कहीं ऊबड़खाबड़ मार्ग रहें। किन्तु धन्य हो, नेताओं! निर्वाचन के बाद आपसे बात करना दुर्लभ हो जाता है, मुलाकात की कौन कहे? फिर किसी तरह सहायता-सहयोग की सोचना तो दूर की कौड़ी है!

कई घटनाएँ स्मृति में उमड़ घुमड़ती हैं। (१) मेरे कविमित्र श्री उमेश 'राही' जी के सुझाव पर मैंने एक बार उनके निकट संबन्धी तत्कालीन विधायक से बात करने का प्रयास किया। दो तीन प्रयास करने के बाद भी उनके पी.ए. से ही बात हुई, विधायक जी व्यस्त ही मिले। (२) मेरे साथ ही राजनीतिक क्षेत्र में कदम रखने वाले मेरे एक पुराने परिचित जब वे प्रदेश में मंत्री थे, एक बार एक दुखी व्यक्ति की मेडिकल सहायतार्थ मैंने उनके मिलने का निश्चय किया और उनके आवास पर गया- दो घंटे प्रतीक्षा करने के बाद उन्होंने जवाब दिया -'आज मेरी तबियत खराब है, फिर कभी आ जाइयेगा।' (३) जब प्रदेश में भाजपा के मुख्य मंत्री आये तो मैंने सूचना निदेशक से 'आर्य लोक वार्ता' के संबन्ध में मिलने का प्रयास किया। कई दिन प्रयास के बाद भी भेंट नहीं हुई और दफ्तरों में पुरानी कार्यशैली बदस्तूर जारी थी अर्थात् जो अखबार कभी छपकर जनता जनार्दन के पास आते नहीं- उनकी पौबारह थी किन्तु सामाजिक क्रान्ति के दिशादर्शक पत्र के लिए कोई जगह नहीं! (श्रीमती वीना उतरेजा साक्षी हैं)। (४) उन्हीं दिनों जनता दरबार में मैंने एक दीन दुखी नारी को- जिसका पति उसे छोड़ कर जा चुका है; की लड़की की शादी में सहायतार्थ भेजा, जनता-दर्शन में उसको मुख्यमंत्री के नहीं, उनके कारिन्दों के दर्शन हुए किन्तु कोई सुविधा नहीं मिली। दो तीन दिन उस अबला के अलग से बरबाद हुए। (५) मेरे अपने एक सहपाठी- विधायक बने फिर मंत्री बने। उन्हीं के क्षेत्र के एक पीड़ित व्यक्ति की चिकित्सकीय सहायता हेतु मैंने उनसे अनुरोध किया। वे शासन के स्तर से कुछ नहीं कर सके- इसका मुझे मलाल नहीं- किन्तु स्वयं तो सौ दो सौ रुपया ही सही, उसकी मदद कर सकते थे। (६) आर्य समाज के क्षेत्र से उठकर मंत्री फिर सांसद बनने वाले एक नेता से- एक आर्य समाज के प्रधान के पुत्र के ऑपरेशन में सहयोग हेतु मैं पीड़ित व्यक्ति के साथ मिलने जब मीराबाई मार्ग स्थित गेस्ट हाउस गया तो उनकी दलबंदी की बातों को सुनकर मुझे बड़ी ग्लानि हुई। मुझे लगा कि क्यों व्यर्थ में मैंने इस व्यक्ति से मिलने के लिए इतना समय बर्बाद किया। राजनीतिक क्षेत्र में ऐसे लोगों की कोई कमी नहीं। अवश्य ही श्री केसरी नाथ त्रिपाठी जैसे उँगली पर गिने जाने योग्य नेता अपवाद हैं- जो मात्र दूरभाष की निमंत्रण वार्ता को मानकर 'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-२००६' में पहुँचे थे। मैं उनका आभारी हूँ।

कोई सी.एम. अपने मंत्रिमण्डल में महत्वपूर्ण विभागों पर बैठे हुए अपने चाचा, ताऊ या पिता, साले, बहनोई के कार्यों की कैसे समीक्षा कर सकता है? आज देश में वंशवाद या परिवारवाद हावी है। किन्तु इसी भारत में श्री लाल बहादुर शास्त्री जब प्रधानमंत्री थे तो कहते हैं उनके पुत्र ने दिल्ली भ्रमण करने की इच्छा व्यक्त की। शास्त्री जी ने गैर सरकारी यात्रा के पेट्रोल का सारा व्यय अपनी जेब से अदा किया। प्रसिद्ध है कि जिन दिनों चाणक्य भारत के प्रधान मंत्री थे- यूनानी शासक सेल्यूकस उनके मिलने आया। चाणक्य एक लैम्प से कुछ लिखा पढ़ी कर रहे थे- सेल्यूकस से मिलते समय उन्होंने उस लैम्प को बुझा दिया तथा दूसरा लैम्प जलाया। सेल्यूकस ने इसका कारण पूछा तो चाणक्य ने कहा- आपसे मिलना आज शासकीय कार्य नहीं था, व्यक्तिगत था। व्यक्तिगत कार्य में सरकारी धन कैसे खर्च कर सकता हूँ। आज शासन की गलतियों के लिए अधिकारी बर्खास्त होते हैं; किन्तु मंत्री क्यों नहीं? अधिकारियों की गलती के लिए मंत्री या सी.एम. क्यों जिम्मेदान नहीं ठहराये जाते हैं? भीषण रेल दुर्घटना पर तत्कालीन रेलमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने इस्तीफा दे दिया था किन्तु बलात्कार के बाद दो बालिकाओं के शव पेड़ पर लटका दिये जाते हैं तो सी.एम. और गृहमंत्री क्यों इस्तीफा नहीं देते? राजनीतिक क्षेत्र में एक मंत्री या मुख्यमंत्री बनता है तो फिर उसकी पत्नी, साले, चाचा, ताऊ, भाई, भतीजे, पुत्र, पुत्रियाँ सभी को पद मिलते हैं किन्तु किसी दूरस्थ व्यक्ति को निराशा के अलावा कुछ नहीं मिलता। वह चाहे जितना योग्य क्यों न हो।

राजा अपने पुत्रों से बढ़कर प्रजा को मानकर चलता है। यह हमारे देश की पुरातन परम्परा है। महाराजा दिलीप की श्रेष्ठता का वर्णन करते हुए कवि कुलगुरु कालिदास 'रघुवंश' में कहते हैं-

प्रजानामेव विनयाधानात्, रक्षणात् भरणादपि
स पिता पितरस् तासां केवलं जन्महेतवः।

अर्थात् प्रजा के पालन पोषण रक्षण इत्यादि गुणों के कारण दिलीप ही प्रजा के पिता थे। उनके वास्तविक पिता तो मात्र जन्म देने वाले थे।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१४१

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में सप्तम समुल्लास का अंश

इससे फल पृथक् होगा परन्तु आत्मा का बल इतना बढ़ेगा, वह पर्वत के समान दुःख प्राप्त होने पर भी न घबरायेगा और सब को सहन कर सकेगा। क्या यह छोटी बात है? क्योंकि जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना नहीं करता वह कृतघ्न और महामूर्ख भी होता है। क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत् के सब पदार्थ जीवों को सुख के लिए दे रक्खे हैं, उसका गुण भूल जाना, ईश्वर ही को न मानना, कृतघ्नता और मूर्खता है।

(प्रश्न) जब परमेश्वर के श्रोत्र नेत्रादि इन्द्रियाँ नहीं हैं फिर वह इन्द्रियोंका काम कैसे कर सकता है?

(उत्तर) **अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः। स वेत्ति विश्वं न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्र्यं पुरुषं पुराणम्॥१॥**

यह उपनिषत् का वचन है। परमेश्वर के हाथ नहीं परन्तु अपनी शक्तिरूप हाथ से सब का रचन, ग्रहण करता, पग नहीं परन्तु व्यापक होने से सबसे अधिक वेगवान, चक्षु का गोलक नहीं परन्तु सबको यथावत् देखता; श्रोत्र नहीं तथापि सबकी बातें सुनता, अन्तःकरण नहीं परन्तु सब जगत् को जानता है और

ईश्वरोपासना से लाभ

उसको अवधिसहित जाननेवाला कोई भी नहीं। उसी को सनातन, सबसे श्रेष्ठ सब में पूर्ण होने से पुरुष कहते हैं, वह इन्द्रियों और अन्तःकरण के बिना अपने सब काम अपने सामर्थ्य से करता है।

(प्रश्न) उसको बहुत से मनुष्य निष्क्रिय और निर्गुण कहते हैं?

(उत्तर) **न तस्य कार्यं करणं च विद्यते न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते। परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया च॥१॥**

यह उपनिषद् का वचन है। परमात्मा से कोई तद्रूप कार्य और उसको करण अर्थात् साधकतम दूसरा अपेक्षित नहीं। न कोई उसके तुल्य और न अधिक है। सर्वोत्तमशक्ति अर्थात् जिसमें अनन्त ज्ञान, अनन्त बल और अनन्त क्रिया है वह स्वाभाविक अर्थात् सहज उसमें सुनी जाती है। जो परमेश्वर निष्क्रिय होता तो जगत् की उत्पत्ति प्रलय न कर सकता। इसलिये वह विमु तथापि चेतन होने से उसमें क्रिया भी है।

(प्रश्न) जब वह क्रिया करता होगा तब अन्तवाली क्रिया होती होगी वा अनन्त?

(उत्तर) जितने देशकाल में क्रिया करनी उचित समझता है उतने ही देश काल में क्रिया करता है। न अधिक, न न्यून क्योंकि वह विद्वान् है।

(प्रश्न) परमेश्वर अपना अन्त जानता है या नहीं? (उत्तर) परमात्मा पूर्ण ज्ञानी है। क्योंकि ज्ञान उसको कहते हैं जिससे ज्यों का त्यों जाना जाय। अर्थात् जो पदार्थ जिस प्रकार का हो उसको उसी प्रकार जानने का नाम ज्ञान है। जब परमेश्वर अनन्त है तो उसको अनन्त ही जानना ज्ञान, उसके विरुद्ध अज्ञान अर्थात् अनन्त को सान्त और सान्त को अनन्त जानना भ्रम कहाता है। 'यथार्थ दर्शनं ज्ञानमिति' जिसका जैसा गुण, कर्म, स्वभाव हो उस पदार्थ को वैसा ही जानकर मानना ज्ञान और विज्ञान कहाता है। (क्रमशः)

वेदांजलि

पवित्र गौ का हनन मत करो

❑ पं. शिव कुमार शास्त्री
भू.पू. संसद सदस्य

**माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट॥**

—ऋग्वेद 8/101/15

शब्दार्थ–

मैं **(चिकितुषे)** प्रत्येक बुद्धिमान् व्यक्ति को **(नु प्रवोचम्)** कहे देता हूँ कि **(अनागाम्)** निरपराध **(अदितिम्)** अहन्तव्या **(गाम्)** गौ को **(मा वधिष्ट)** कभी मत मार [क्योंकि यह] **(रुद्राणां माता)** रुद्र देवों की माता है **(वसूनां दुहिता)** वसु देवों की कन्या है और **(आदित्यानां स्वसा)** आदित्य देवों की बहिन है तथा **(अमृतस्य नाभिः)** अमृतत्व का केन्द्र है। २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य व्रतपूर्वक तप करने वाला वसु, ३६ वर्ष तक इसी प्रकार साधना करने वालों को रुद्र और ४८ वर्ष तक तप करने वालों को आदित्य कहा जाता है। ये ही सुसंस्कृत समाज के तीन वर्ग हैं और इनके साथ घनिष्ट सम्बन्ध दिखाने के लिए पुत्री, बहिन और माता के रूप में गौ को बताया गया है।

व्याख्या–

प्रत्येक विचारशील व्यक्ति को इस मंत्र में एक चेतावनी दी है कि तू अपने जीवन में गौ को कभी मत मार। यह गौ निर्दोष और निरपराध है। यह गौ रुद्रदेवों की माता है, वसुदेवों की कन्या है और यह आदित्यदेवों की बहिन है। इससे भी बढ़कर यह अमरपन का केन्द्र है। तू इसकी रक्षा करके स्वयं अमर हो जाएगा।

वैदिक कोष 'निघण्टु' में परिगणित गौ शब्द के अर्थों में से यहाँ प्रकरणानुसार तीन अर्थ अपेक्षित हैं-प्रथम-वाणी, अन्तरात्मा की पुकार, दूसरा-मातृभूमि, और तीसरा-गौ नामक पशु। इन तीनों की रक्षा करके मनुष्य को अपना, समाज और राष्ट्र का कल्याण करना चाहिए।

सबसे पूर्व अन्तरात्मा की पुकार पर विचार कीजिए। मनुष्य स्वयं ऊँचा उठ रहा है अथवा नीचे गिर रहा है, इसका प्रमाण एक ही है कि वह स्वयं अपनी दृष्टि से जिसे ठीक समझता है, उस पर आचरण कर रहा है अथवा सम्पत्ति के प्रलोभन में और दुनिया की वाहवाही की कोशिश में अन्तरात्मा की अवहेलना कर रहा है। यदि वह आन्तरिक प्रेरणा पर सत्य का मार्ग अपनाता है, तो वह स्वयं अपनी आत्मा में अपार बल और सन्तोष का अनुभव करता है। इस स्थिति में संसार के लोग उसका विरोध भी करते हैं तो इसकी उसे कोई परवाह नहीं होती, क्योंकि उसे निश्चय है कि उसने वही किया है जो उसे करना चाहिए था। यदि आचरण इसके विपरीत है, अर्थात् आत्मा जिसको अनुचित समझ रही है उसी मार्ग को किसी प्रलोभन में अपनाता है तो फिर वह संसार की नज़र में चाहे कुछ बन जाय, किन्तु स्वयं अपनी दृष्टि में वह पतित हो गया। ऐसा व्यक्ति संसार के महात्मा कहने से महात्मा नहीं बनेगा। हमें अपने गन्तव्य मार्ग का निश्चय लोगों की इच्छा पर न छोड़कर अपनी आत्मा की पुकार पर छोड़ना चाहिए।

दूसरी गौ मातृभूमि है। इस माता का ऋण भी हम पर बहुत बड़ा है। हमारे शरीर का कण-कण इसी से बना है। संसार में आने पर हमारी जन्मदात्री माता तो प्रसव-वेदना से अपनी सुध-बुध खोए हुई थी, उस समय सर्वप्रथम इसी भूमि माता ने हमें अपनी छाती से लगाया। यही जीवन-भर अन्न, फल, औषध तथा अनेक पोष्य रसों से हमारे शरीर की रक्षा करती है। अन्त में हमारे शरीर से जीवात्मा पृथक होने पर, जब कि सब सांसारिक जनों से सम्बन्ध विच्छिन्न हो जाता है, तब भी यह मातृभूमि ही है, जो हमारे शरीर की मिट्टी को मुट्ठी भर राख के रूप में अपनी छाती से चिपटा लेती है। इसीलिए वेदमाता ने भी मातृभूमि के इस गौरव को ध्यान में रखकर, हमें उपदेश दिया-

'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।'

(अथर्व. १२/१/१२)

'भूमि मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूँ।'

'वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम।'

(अथर्व. १२/१)

'हम तेरे सम्मान की रक्षा के लिए सर्वस्व निछावर करने को उद्यत रहें।' पूर्वकाल में मातृभूमि के लिए यही निष्ठा विद्यमान थी। लम्बी दासता और उचित शिक्षा के अभाव में खेद है कि वर्तमान पीढ़ी में यह भाव-प्रवणता नहीं है।

अब तीसरे नम्बर पर गो-पशु, जिसके असाधारण गुणों के कारण कृतज्ञता और श्रद्धा की भावना से हमारी संस्कृति में उसे गोमाता कहा जाता है। प्रस्तुत मंत्र में न केवल उसे माता कहा गया है, अपितु उसे पुत्री और भगिनी भी कहा गया है, अर्थात् जो हमारे भावनात्मक और पवित्र पारिवारिक सम्बन्ध माता, पुत्री और बहिन के साथ हैं, वे ही इस गौ के साथ हैं। वैदिक संस्कृति में उपयोगिता की दृष्टि से गौ और घोड़े का महत्त्व मनुष्य के बराबर किया आँका गया है। इसीलिए अथर्ववेद में उपदेश है कि-

**यदि नो गां हंसि यद्यश्व यदि पूरुषम्।
तं त्वा सीसेन विध्यामो यता नो सोऽवीरहा॥**

(अथर्व. १/१६/४)

'जो दुष्ट हमारे गो-धन, अश्व-धन और मनुष्यों का विनाश करता है, उसे हमें सीसे से (गोली से) बींध देना चाहिए। यहाँ सबसे पूर्व गौ को ही गिनाया गया है।

वस्तुतः प्रकृति ने पृथिवी पर गौ के रूप में सैकड़ों धाराओंवाला झरना खोल दिया है। पृथिवी से झरनेवाले निर्झर एक समय आता है कि सूख जाते हैं, इसके अतिरिक्त इन झरनों में सम्पूर्ण वर्ष एक जैसा पानी नहीं झरता; वर्षा

(शेष पृष्ठ 3 पर.......)

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-७२

अशक्तोऽनाथोहं विगलितगतिः शून्यनयनो
मुहुस्त्रस्तःस्त्रस्तः परभिषजं त्वामुपगतः।
अहो ! भव्यं नव्यं कठिनमपि वा विस्मयकरं
चिकीर्षामि क्षोण्यां किमपि करणीयं तव यते?

हे संन्यासी !
मैं असमर्थ हूँ, अनाथ हूँ,
गतिहीन हूँ और आँखें
सूनी हैं मेरी !
बार-बार भय खाया हुआ
तुम्हें परम चिकित्सक मानकर
शरण में आया हूँ ।
फिर भी,
कोई भव्य, नवीन, कठिन
और तुम्हारा सर्वाधिक प्रिय
कार्य करना चाहता हूँ
जो दूसरों ने न किया हो।
मेरी सहायता करो, यति !

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

पुण्य स्मरण

आर्य लोक वार्ता स्मृति सम्मान के पुरोधा

पण्डित शान्तिस्वरूप शास्त्री वेदालंकार

आर्य समाज, नरही, लखनऊ के भू.पू. प्रधान और अनेक वर्षों तक लखनऊ रहकर आर्य समाज की निष्काम भाव से सेवा करने वाले आर्य विद्वान् पं.शान्ति स्वरूप शास्त्री का जन्म सन् १६०२ में उ.प्र.के बदायूँ नगर में हुआ था। आपके पिता का नाम था श्री विष्णुस्वरूप जो उस समय शासन के एक महत्त्वपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित थे। विष्णु जी चाहते तो बालक शान्तिस्वरूप को कहीं भी शिक्षा दिला सकते थे किन्तु राष्ट्र-निर्माण की भावनाओं से प्रेरित होकर उन्होंने शान्ति स्वरूप को शिक्षा हेतु उस समय के विख्यात गुरुकुल- गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में प्रवेश दिलाया, जहाँ महात्मा मुंशीराम (श्रद्धानन्द) तथा आचार्य रामदेव जैसे विद्वानों के चरणों में बैठकर शान्ति ने शिक्षा ग्रहण की और वेदालंकार की उपाधि अर्जित की। गुरुकुलीय शिक्षा के वाद आपने पंजाब विश्वविद्यालय से प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की। पढ़ाई पूरी करके आपने उच्चादर्शों से प्रेरित होकर अंग्रेजों के की नौकरी न करते हुए- आर्य समाज की सेवा करना श्रेयस्कर समझा। आर्य समाज नरही को केन्द्र बनाकर आपने अनेक बालक-बालिकाओं को विधर्मी होने से बचाया तथा स्वामी श्रद्धानन्द के शुद्धि प्रोग्राम को आगे बढ़ाया। आपने काफी समय तक व्यायज़ एंग्लो विद्यालय, लखनऊ में संस्कृत अध्यापक के रूप में कार्य किया तथा शेष समय ट्यूशन आदि करते रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक के रूप में आप प्रत्येक रविवार को भिन्न भिन्न आर्य समाजों में उपदेश करते रहे। संस्कारों को सम्पन्न कराने में आपको दक्षता प्राप्त थी। चौधरी चरण सिंह(तत्कालीन मुख्य मंत्री, उ.प्र.) की पुत्री का विवाह संस्कार आपने सम्पन्न कराया। पिता के निधनोपरान्त उनके स्थान पर मिलने वाले राजकीय पद को आपने यह कहकर ठुकरा दिया- कि अंग्रजों की गुलामी नहीं करूंगा।

ऐसे स्वाभिमानी आर्य विद्वान् का सन् १६७२ में निधन हो गया। श्री दीपक कुमार दर्शन आपके पौत्र हैं तथा श्री सन्तोष कुमार आर्य आपके पुत्र, श्रीमती शोभा पुत्रवधू तथा श्रीमती आशा आर्या आपकी पुत्री हैं। जाने माने आर्यनेता श्री रमेश नारायण सक्सेना आपके दामाद हैं। सम्पूर्ण परिवार आज भी आपको स्मरण कर गौरव का अनुभव करता है। श्री दीपक दर्शन की अभिलाषा है कि आपकी स्मृति में सम्मान की परम्परा 'आर्य लोक वार्ता' आगे बढ़ाता रहे। *(आ.लो.वा.न्यूजडेस्क)*

(पृष्ठ 2 का शेष......)

ऋतु और उसके कुछ समय बाद तक अधिक जल निकलता है और ग्रीष्म ऋतु में कम हो जाता है। इस पृथिवी के निर्झर को एक स्थान से दूसरे स्थान पर नहीं ले जा सकते, किन्तु गौरूपी ऐसा विलक्षण झरना है इसकी धारा कभी सूखती नहीं, अपितु सन्ततिक्रम से सदा बनी रहती है। इसकी धारा उत्तरोत्तर बढ़ती है, कभी कम नहीं होती और इस झरने को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जा सकते हैं।

ऋषि ने गोवध पर प्रतिवन्ध लगाने की माँग के लिए महारानी विक्टोरिया के पास बहुत बड़ी संख्या में भारतीयों के हस्ताक्षरों से प्रार्थना-पत्र भेजने का भी विचार किया था। देश में जन-जागृति के लिए 'गो-कृष्यादि रक्षिणी सभा' की स्थापना की थी। 'गोकरुणानिधि' नाम से एक महत्त्वपूर्ण पुस्तिका लिखी, उसमें सामान्य तया सभी दुधारू पशु- भैंस, बकरी, भेड़ आदि की रक्षा की भी वकालत की, किन्तु सबसे अधिक जोर गोरक्षा पर दिया है।

अन्त में हमारा अपनी सरकार से यही कहना है कि- जैसे पक्षियों में मोर को राष्ट्रीय पक्षी घोषित करके उसकी रक्षा का दायित्व अपने ऊपर लिया है, उसी प्रकार अविलम्ब पशुओं में गो-पशु को राष्ट्रीय पशु घोषित करके राष्ट्र की समृद्धि का पथ प्रशस्त करे और प्रजा का स्नेह एवं परमेश्वर का आशीर्वाद प्राप्त करे।

हमने वैदिक गौ शब्द के आधार पर मंत्र के अन्तरात्मा की आवाज, मातृभूमि और चतुष्पाद गौपरक अर्थ दिखा दिया है। विद्वज्जन गौर-पदवाच्य अन्य अर्थ भी ऊहित कर सकते हैं। *('श्रुति सौरभ' से साभार)*

अक्षर लोक

ग़ज़ल की दुनिया में डॉ.कैलाश निगम

डॉ.कैलाश निगम का नाम किसी परिचय का मोहताज़ नहीं है। **'तार से बेतार तक'** डॉ. कैलाश निगम का तीसरा ग़ज़ल संग्रह है। डॉ.कैलाश निगम के श्रोता और पाठक अच्छी तरह से जानते हैं कि वह वैसी ही ग़ज़ल कहते हैं, जैसी अन्य अच्छे ग़ज़लकार कहते हैं, लेकिन ठीक वैसी नहीं कहते जैसी अन्य कहते हैं। उनके कहने की अपनी विशिष्टता है। यदि आप देखें, तो क्लासिकी गज़लों वाली वैयक्तिकता और आध्यात्मिकता भी उनकी गज़लों में है और समकालीन कही जाने वाली गज़लों की तरह वह गलियों में भी फेरा लगा आती हैं और विद्रोह के मैदान में भी डेरा डाल देती है। वह अपनी लम्बी बात करती है, परिवार की बात करती है, पड़ोस की बात करती है, देश की बात करती हैं, दुनिया की बात करती हैं और इनसे ऊपर उठकर अलौकिक जगत की बात करती हैं लेकिन वैसे नहीं जैसे सब लोग करते हैं, उनमें एक अलग खुशबू है, अलग टटकापन है, अलग अन्दाज है।

डॉ.कैलाश निगम के सामने 'ग़म-ए-जानाँ' से लेकर 'ग़म-ए-दौराँ' तक अनन्त प्रश्न हैं। वह उन्हें पूछते हैं, अपने से और अपनों से! जूझते हैं उनसे!

थक गया 'विक्रम' तो ज़ारी हो गये 'कैलाश' तुम
और कितने प्रश्न पूछोगे अभी बेताल से!

वह पूछते हैं-

अब भी वही ज़ुल्म, घुटन भी वही, तो फिर
क्यों आपके बगावती तेवर बदल गये!

डॉ.कैलाश निगम और उनकी गजलें वस्तुतः जीवन, जगत ओर सच्चाई को ही उकेरना चाहती है। सत्य, शिवं और सुन्दर के साथ रहना चाहती है। शिव वह जो सुन्दर भी हो।

'तार से वेतार तक' आते आते डॉ. कैलाश निगम की गज़लों का शिल्प, उनकी भाषा, अभिव्यक्ति-शैली और उनका निशाना और सहज-सार्थक होता गया है। बात इतनी सरल कि लगे, वस अपने मुँह की बात निकल गयी और इतनी कठिन कि वह वस डॉ.कैलाश निगम के वस की बात ही लगे। इतनी सरल कि समझने में एक पल भी न लगे और इतनी कठिन कि समझते समझते जमाने लग जायें। इतनी सरल कि सीधे कलेजे में जा बसे और इतनी कठिन कि निकालने में आँखें भर आयें। 'तार से बेतार तक' एक उपलब्धि है। इसके लिये डॉ.कैलाश निगम को साधुवाद और बधाई!

आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि गजल-प्रेमी काव्य-रसिक इस हर तरह से अपनायेंगे। 'तार से वेतार तक' का प्रकाशन अंजुमन प्रकाशन, इलाहाबाद ने किया है। हार्डबाउण्ड सौ से अधिक पृष्ठों वाली इस किताब का मूल्य दो सौ रुपये मात्र है।

वाचनालय से

'चीन में रोज़ा रखने पर रोक' शीर्षक समाचार देते हुए 'दैनिक जागरण' लिखता है कि चीन के मुस्लिम बहुल हिंसाग्रस्त प्रान्त शिनजियांग में सरकार ने रमजान के दौरान मुस्लिम समुदाय पर रोज़ा रखने का प्रतिबन्ध लगाया है। विभिन्न सरकारी विभागों ने कर्मचारियों से लिखित में लिया है कि वे रमजान के दौरान रोजा नहीं रखेंगे।

साउथ चाइना मार्निंग पोस्ट की वेबसाईट के मुताबिक सरकारी अधिकारी और छात्र रोजा समेत किसी भी धार्मिक गतिविधि में हिस्सा नहीं ले सकते। यह प्रतिबन्ध पार्टी सदस्यों, शिक्षकों और युवाओं पर भी लागू होगा। पाबंदी लगाने वालों में वाणिज्यिक मामलों का विभाग और मौसम विभाग भी शामिल है। सरकारी अखबारों में भी उपवास से स्वास्थ्य को होने वाले खतरे के प्रति सम्पादकीय छापे जा रहे हैं। मुस्लिम समुदाय ने इस कदम को चीन के राष्ट्रीय नेताओं की ओर से उनकी संस्कृति पर हमला बताया है।

इराक के विद्रोही गुट आई.एस.आई.एस.की ओर से वहां चल रही लड़ाई में कई भारतीय भी लड़ रहे हैं। गुट के सरगना अबू बकर अल बगदादी के एक ऑडियो से यह बात पता चली है। यह खबर अंग्रेजी अखबार हिन्दुस्तान टाइम्स ने दी है।

समझा जाता है कि बगदादी के पास लगभग १०,००० लड़ाके हैं। इस बात की पुष्टि हो चुकी है कि कुछ भारतीय सीरिया में लड़ रहे हैं। इंडियन मुजाहिदीन का एक धड़ा अफगानिस्तान में तालिबानियों की ओर से लड़ रहा है। बताया जाता है कि ज्यादातर विदेशी लड़ाके आत्मघाती हमलावर बन जाते हैं। इराक में जितने आत्मघाती हमले हुए हैं उन सबमें आत्मघाती हमलावरों का हाथ रहा। वे अपने शरीर पर बम बांधकर भीड़ में चले जाते हैं और खुद को उड़ा देते हैं। आई.एस.आई.एस. विदेशी लड़ाकों को यही भूमिका देता है।

बगदादी ने अपने ऑडियो में यह भी कहा है कि भारत, म्यांमार जैसे देशों में मुसलमानों के हक छीन लिये गये हैं। बगदादी ने अपने समर्थकों से यह भी कहा कि उसके इस्लामी देश में अन्य मुल्कों को मिलाने की कवायद की जाये। उसे अपने ऑडियों में मुसलमानों पर अत्याचार की बातें भी कही हैं।

'अफगानिस्तान में महाभारतकालिक विमान मिला' शीर्षक लेखन **'पाथेय कण'** से उद्धरित कर **'सत्यार्थ सौरभ'** मासिक (उदयपुर) ने प्रकाशित किया है। लेख के अनुसार रूसी खुफिया विभाग की रपट के अनुसार लगभग तीन वर्ष पूर्व दिसम्बर में अमेरिकी सैनिकों को हेरात की एक गुफा में अन्तरिक्ष-विमान जैसी आकृति का एक प्राचीन विमान मिला। कमाण्डो टुकड़ी के आठ सैनिकों ने विमान को गुफा से निकालने का प्रयास किया तो आठो सैनिक गायब हो गये। इस रहस्यमय घटना का समाचार मिलते ही अमेरिका के मित्र देशों के वैज्ञानिक और नेता अफगानिस्तान में इकट्ठा हो गये। वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया कि गुफा में मौजूद विमान कम से कम पांच हजार वर्ष पुराना महाभारत युद्ध के समय का है। वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष भी निकाला कि विमान ''समय चक्रवात'' (टाइम वैल) में फँसा हुआ है। विमान के चारों ओर इलेक्ट्रोमैगनेटिक रेडियेशन-ग्रैविटी क्षेत्र है, जो किसी भी व्यक्ति को तत्काल ऊर्जा में वदलकर दूसरे समय-अन्तराल में भेज देता है। आधुनिक भारत में उक्त रेडिएशन क्षेत्र की खोज महान् वैज्ञानिक आइंस्टीन ने की थी।

३१ जुलाई २०११ में अमेरिकी सेना ने विमान की खोजबीन के लिये फिर से एक सैनिक टुकड़ी को भेजा। इस टुकड़ी के तीन सैनिक विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र को मापने के उपकरण साथ ले गुफ़ा के अन्दर घुसे। ये सैनिक भी गुफा में पूरी तरह गायब हो गये। बाहर खड़े उनके साथी वहाँ से भाग खड़े हुए।

रूसी रपट के अनुसार ५ अगस्त २०११ को अमेरिकी कमाण्डो ने विमान को 'टाइम-वैल' सहित पहले कावुल और फिर अमेरिका ले जाने की कोशिश की। आधुनिक तकनीक का सहारा लेते हुए विशेष कमाण्डों ने हेलिकॉप्टर के सहारे विमान सहित 'टाइम-वैल' का उठाया और कावुल ले जाने लगे। इसके पीछे चार ब्लैक-हॉक हेलीकॉप्टरासें में 'नेवी सील्स' के कमाण्डो भी थे। इन चालीस विशेष कमाण्डो के साथ सधे हुए 'जर्मन शेफर्ड' कुत्ते भी थे। इन कुत्तों में विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र में होने वाली किसी भी बदलाव को पहचान लेने की क्षमता थी।

कावुल के समीप 'समय चक्रवात' अचानक सक्रिय हो गया और उसमें सभी चालीस जवान, हेलीकॉप्टर तथा जर्मन शेफर्ड कुत्ते, सभी कुछ नष्ट हो गया। उक्त रपट के अनुसार विमान और टाइम-वैल भी इसमें नष्ट हो गये। अमेरिकी सरकार ने इस दुर्घटना को पहले तो छिपाये रखा और बाद में सैनिकों की रॉकेट हमले में शहादत कहकर प्रचारित किया। वास्तव में एक भी सैनिक का शव अमेरिका नहीं ले जाया जा सका, क्योंकि सारे सैनिक राख में बदल चुके थे।

'मुंबई में धमाके करके बहुत सुकून मिला' शीर्षक समाचार प्रकाशित करते हुए **'नवभारत टाइम्स'** ने इंडियन मुजाहिदीन के सह-संस्थापक यासीन भटकल का बयान छापा है जिसमें उसने कहा है कि मुंबई में धमाके करके उसे बहुत संतुष्टि मिली। न्यूज चैनल एनडीटीवी ने सूत्रों के हवाले से वताया है कि भटकल ने पुलिस को दिये इकबालिया बयान में कहा कि उसे मुंबई में धमाके करने का कोई अफसोस नहीं है, बल्कि उसे तो बहुत संतोष मिला।

पिछले साल विहार से गिरफ्तार किये गये भटकल ने डीसीपी रैंक के अफसर के सामने दिये अपने वयान मे कहा है कि मुंबई में धमाके करके उसने कोई अपराध नहीं किया। भटकल के साथी असादुल्ला अख्तर ने भी यही बयान दिया है कि उसे धमाकों का कोई अफसोस नहीं है। एरीस के मुताविक भटकल १३ जुलाई २०११ को मुंबई के झरवेरी बाजार, आप्रा हाउस और कवूतर खाना में हुए धमाकों के लिए जिम्मेदार है। इन धमाकों में २१ लोग मारे गये थे और १४१ घायल हुए थे।

विविधा / शुभाकांक्षा

'आर्य्य लोक वार्ता' अत्यन्त सूक्ष्म हिन्दी की पत्रिका है। प्रत्येक अंक में प्रकाशित सामग्री वैदिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक सरोकारों से संवर्धित एवं परिपूर्ण होती है। मई २०१४ के अंक में प्रकाशित 'नरेन्द्र के रूप में राघवेन्द्र का हुआ राज्याभिषेक' हमें इतिहास की उन तमाम महान विभूतियों, मनीषियों और नारी के निश्छल त्याग एवं नारी शक्ति द्वारा स्थापित उत्कृष्ट आदर्शों का स्मरण कराता है।

विद्वान् सम्पादक महोदय द्वारा 'यशोदा मातृशक्ति' सम्पादकीय में जिन यशोदाओं के त्याग का मार्मिक वर्णन किया गया है उससे यह प्रकट होता है कि इस महान देश में आज भी इतिहास बन चुकीं उन महान् मातृशक्ति सीता, सावित्री, गार्गी, अनसूइया, यशोदा, जैनधर्म प्रवर्तक महावीर स्वामी की पत्नी यशोदा, सिद्धार्थ गौतम बुद्ध की पत्नी यशोधरा इत्यादि के समतुल्य महान् परम्पराओं की वाहक स्त्रियाँ अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। यशोदा बेन उसी कड़ी का एक सशक्त हिस्सा हैं।

इस पत्रिका के लिए यह कहना कि इस छोटी सी पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार 'गागर में सागर' भरने जैसे हैं, यह उपमा भी हल्की प्रतीत होती है। पत्रिका में अंकित प्रत्येक लेख का सार हृदयंगम करने योग्य होता है। जिस प्रकार गंगा मैया के जल को गंगाजल से आगे बढ़कर अमृत कहा जाता है उसी प्रकार मेरी राय में 'आर्य लोक वार्ता' को मात्र समाचार पत्र कहना पर्याप्त नहीं है अपितु यह तो नैतिक, वैदिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, क्षेत्र में स्थापित उत्कृष्ट परम्पराओं, मापदण्डों को पुनर्स्थापित करने का सतत् अभियान है।

-नरसिंह पाल
२०१, राजीव नगर, इन्दिरा नगर, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' मई अंक में प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित 'अब आयेगा रामराज्य' निश्चय सत्य है।। 'मातृमान् पितृमान् आचार्यवान पुरुषो वेदः'- गुजरात उर्वरा भूमि में वैदिक सूर्यादय हुआ, तो रामराज्य अवश्य आयेगा। क्रमशः त्रस्त जनमानस के दुःख दूर होंगे। संकटों का सामना करते हुए कुछ समय अवश्य लग सकता है।

सम्पादकीय में तो यशोदाओं का वर्णन है जिनमें विशिष्ट आन्तरिक समानतायें हैं। लेकिन सदियों से नारी को योग साधना में बाधक समझा जाता रहा। प्रमाणित है जयशंकर प्रसाद की कामायनी में आकुल हृदया श्रद्धा कहती है 'अबला के भय से भाग गये, वे मुझसे भी निर्बल निकले। नारी निकले तो आराती है, नरयती कह कर चल निकले।।'

'वेदांजलि' में पं.शिवकुमार शास्त्री जी ने असमर्थ वृद्धों के कर्तव्यों पर जो कि कोई अपनी मजबूरी के कारण वानप्रस्थ में प्रवेश नहीं कर पा रहे हैं, उन पर अच्छा प्रकाश डाला है। आत्मसात करने वाला स्मरणीय मंत्र है। 'सत्यार्थ प्रकाश वार्ता' में निर्गुण और सगुण उपासना पर मनोवैज्ञानिक ढंग से यमनियमों का पालन करने पर अच्छा प्रकाश डाला है। 'वाचनालय से' द्वारा अमृत खरे जी ने सूचित किया है कि जो भारत के मूल निवासी सउदी अरब में कष्ट उठाकर रह रहे हैं, नित्य रोजमर्रा के जीवन में उपेक्षापूर्ण व्यवहार हो रहा है। खेद का विषय है। इसके लिए कुछ सोच विचार करके सुधारात्मक तरीका निकालना पड़ेगा। आनन्द कुमार जी का 'मनुष्य का विराट रूप' हमेशा की तरह कुछ विशिष्ट मानव कलेवर को सुसज्जित करने हेतु विनय, नम्रता, सुशीलता को दांत, जीभ, वृक्ष इत्यादि के माध्यम से अच्छी प्रकार समझाया गया है। श्री आनन्द गिरि की 'व्याख्यान माला' अत्यंत प्रभावशाली है। 'काव्यायन' में सभी कविताएँ अपने अपने तरीके से मोदी-गुण गा रही हैं। त्रस्त जनमानस को अपने नेता नरेन्द्र मोदी से बहुत आशायें हैं।

प्रख्यात वेदविदुषी डा.निष्ठा विद्यालंकार की जीवन गाड़ी समीर एडवोकेट का सहारा पाकर पुनः पटरी पर आ गई, परिणय सूत्र में बंध गई। बहुत ही अच्छा रहा इनके लिए बहुत बहुत हार्दिक बधाई।

-प्रमोद कुमारी
सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

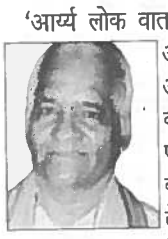

'आर्य्य लोक वार्ता' का मई १४ का अंक प्राप्त कर अतीव प्रसन्नता हुई क्योंकि मुख्य पृष्ठ पर श्री नरेन्द्र मोदी के राज्याभिषेक पर लेख प्रकाशित हुआ।

प्रधान सम्पादक जी ने तो १८ मई १४ को ही हमारी बधाई स्वीकार कर ली थी कि आपके द्वारा की गई भविष्यवाणी प्रभुकृपा से पूर्ण हो गई।

पृष्ठ ३ पर श्री नारायणदीन चौधरी पूर्व प्रधान आर्य समाज हसनगंज पार लखनऊ के विषय में पढ़कर मेरा मस्तक उनका स्मरण करके झुक गया। वे वास्तव में तपस्वी-दानवीर थे। उनकी अन्त्येष्टि किस प्रकार की जाए, उन्होंने अपने 'इच्छा-पत्र' में लिखी थी। मैं क्या अन्य पाठक भी प्रभावित अवश्य होंगें। श्री अमृत खरे के 'वाचनालय से' द्वारा जो सूचनाएँ-समीक्षाएँ पढ़ीं- पाठकों के ज्ञान में वृद्धि हुई। 'काव्यायन' में सभी रचनायें पढ़ीं, श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' विशेष रूप से बधाई के पात्र हैं। मैं प्रधान सम्पादक जी को धन्यवाद देता हूँ कि इतनी सुन्दर पठन सामग्री हमें उपलब्ध करा रहे हैं

-पाल प्रवीण
एम.एस.१२०, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

मई मास की आर्य लोक वार्ता मासिक पत्रिका जैसे ही डाकिए ने दी तो देश के वर्तमान प्रधानमंत्री की तस्वीर मुख पृष्ठ पर दिखाई दी। ऊपर दृष्टि डाली तो 'नरेन्द्र के रूप में राघवेन्द्र का हुआ राज्याभिषेक' शीर्षक पढ़ने मे आया। यह लेख कितना सामयिक व उपयुक्त है जो न्यूज-डेस्क के लेखक के ज्ञान व दूरदर्शिता का परिचय देता है। निस्संदेह उदीची दिशा गुजरात में ही भारत के उद्धारक श्रीकृष्ण, महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी, वल्लभभाई पटेल ही पैदा नहीं हुए बल्कि देश के वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी गुजरात के ही हैं।

जन्मदात्री माँ हीराबेन के चरण स्पर्श व लोकसभा की दहलीज पर माथा टेककर मातृभूमि को नमन व वाराणसी में गंगा स्तवन कर मातृ-संस्कृति (सरस्वती) को प्रणाम करना, उनकी भारतीय संस्कृति के प्रति गहरी निष्ठा को इंगित करता है।

रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित 'नये भारत का भाग्य पुरुष' कालजयी काव्य भी बहुत उपयुक्त व प्रभावशाली प्रतीत हुआ। मासिक पत्रिका की प्रगति की कामना सहित-

-प्रेमचन्द गुप्त
नालंदा कालोनी, मवाना, मेरठ (उ.प्र.)

***

'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह २०१४' से आपने जो स्मृति-पुरस्कारों की परम्परा प्रारम्भ की है; वह सर्वथा स्वागत के योग्य है। इससे पूर्वज महा पुरुषों की स्मृति सजीव होती है। उनके उच्चादर्शों की ओर ध्यान आकर्षित होता है। इस बार आपने स्व.शान्तिस्वरूप शास्त्री स्मृति सम्मान योजना की शुरुआत की है; जिसका मैं अभिनन्दन करता हूँ। स्व. शास्त्री जी मेरे पूज्य पितामह थे; उनके स्मृति-चरणों में मैं नतमस्तक हूँ और आपसे अनुरोध है कि स्व.शास्त्री जी की स्मृति में सम्मान की परम्परा को अगले वर्षों में भी जारी रखें। इस संबन्ध में जो भी योगदान अपेक्षित होगा, उसके लिए मैं आपको आश्वस्त करता हूँ।

-दीपक दर्शन
८२, भूसा मंडी, अमीनाबाद, लखनऊ

***

मुझे आर्य लोक वार्ता का मार्च अप्रैल अंक विलम्ब से प्राप्त हुआ, इसमें 'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-२०१४' का चित्रमय विस्तृत विवरण अत्यंत सुखद लगा। मैं उक्त कार्यक्रम सम्मिलित तो नहीं हो सकी किन्तु समारोह की क्रमिक गतिविधियों से प्रस्तुतियाँ साकार हो उठीं और आचार्य ओजोमित्र शास्त्री का अभिभाषण शब्दशः मिल गया। 'रविमंडल देखत लघु लागा' सम्पादकीय की भविष्य वाणी सचमुच सत्य हुई जिसकी चर्चा आपने मई अंक में अग्रलेख में की है। श्री नरेन्द्र मोदी का सिंहासनरूढ़ होना अत्यंत शुभ एवं सुखद ऐतिहासिक घटना है। 'काव्यायन' तो आपने नरेन्द्र मोदी को ही समर्पित किया है। इसकी सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं। सम्पादकीय में विभिन्न यशोदा-मातृशक्तियों का सम्यक विवेचन भी प्रभावपूर्ण है। आपकी सिद्ध साहित्यिक मनीषा को हृदय से नमन करती हूँ। प्रत्येक अंक संग्रहणीय होता है तथा इसको बार बार पढ़ने से अत्मिक आनन्द मिलता है। आर्य लोक वार्ता का परिवार, परिश्रमी है। भाषा भाव, 'वाणी' अति आत्मसंयमी है।।

-सविता वाणी
गौरीगंज, अमेठी, (उ.प्र.)

***

आर्य लोक वार्ता मई अंक में रामराज्य के प्रतीक नरेन्द्र मोदी के राज्याभिषेक का मार्मिक विश्लेषण अत्यंत मनोहारी लगा। इसमें संस्कृति (सरस्वती), मातृभाषा (इड़ा) तथा मही (लोकसभा दहलीज का नमन) का सटीक एवं सार्थक रूपक प्रेरक एवं प्रणम्य है। आपकी सशक्त सारस्वत लेखनी को साधुवाद। 'मातृशक्ति यशोदा' चिन्तन के माध्यम से आपका सम्पादकीय भी अद्वितीय रहा। सचमुच सत् चित् आनन्द प्रदायक। 'अनन्त की खोज' व्याख्यान माला के अन्तर्गत सांस्कृतिक परिवर्तन और जड़ता का सजीव चित्रण आत्मबोध जागृत करता है। अन्य नियमित स्तम्भों की विषय वस्तु यथावत् ज्ञान संवर्धन करती है। 'काव्यायन' में समयानुकूल रचनाओं से भी नरेन्द्र मोदी का विजय गान सर्वार्था उत्साह जनक है। ओजोमित्र शास्त्री की संस्कृत रचना 'मोदी मोदयते' विशेष प्रभावी है। डॉ.शितिकण्ठ, राजाभ, रमनलाल अग्रवाल आदि की कविताएँ आह्लादित करती हैं। कालजयी काव्य में रामधारी सिंह 'दिनकर' की ओजस्वी वाणी से भी यदि नरेन्द्र मोदी 'भाग्य पुरुष' का अभिषेक किया जाना जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। अन्तस्थल से नरेन्द्र मोदी को शुभकामना अर्पित है-

सत्ता मिली नरेन्द्र मोदी को, साहस-शक्ति जुटाएँ।
जनमानस की आशाओं को, पूरा कर दिखलाएँ।
अन्दर और बाह्य संकट है, भारत माँ को घेरे,
आश्वासन अनुरूप सुदिन अब, श्रम-निष्ठा से लाएँ।।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
११७, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ

***

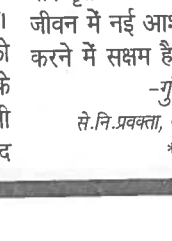

'आर्य्य लोक वार्ता' का मई, २०१४ अंक प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ पर का लेख बेबाक, सटीक एवं प्रेरक है। नरेन्द्र मोदी जी के प्रधान मंत्री बनने विषयक 'आर्य लोक वार्ता' की भविष्यवाणी शत प्रतिशत सत्य सिद्ध हुई, जबकि अनेक विख्यात ज्योतिषियों की इस संबन्ध में की गई भविष्यवाणियाँ हवा हवाई ही साबित हुईं। सम्पादकीय में आपने प्राचीन एवं अर्वाचीन इतिहास को खँगालते हुए यशोदा नामक तमाम प्रणम्य नारियों को यकजा करके उनके विषय में नवीन जानकारी पाठकों को देने का श्लाघनीय कार्य किया है। 'काव्यायन' के अन्तर्गत मोदी जी पर एक साथ ढेर सारी रचनाएँ पढ़कर अभिभूत हुआ। लेख सारगर्भित एवं ज्ञानवर्द्धक लगे।

-डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर
जी-०२, लोरपुर रेजीडेंसी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' का प्रत्येक अंक नई ऊर्जा का संचार करने में समर्थ है। मेरे लिए सबसे बहुमूल्य और आकर्षण की वस्तु है; 'विनय पीयूष'- श्री अमृत खरे द्वारा वेदमंत्र का काव्यानुवाद। यह अप्रतिम निधि मात्र 'आर्य लोक वार्ता' के पास है।

मुखपृष्ठ पर जो सामग्री प्रकाशित होती है; वह एकदम अनूठी होती है। भारतवर्ष के किसी भी पत्र में इतनी उच्चकोटि की विचारपरक सामग्री प्रकाशित नहीं होती है। हिन्दी भाषा का प्रांजल और प्रवाहपूर्ण स्वरूप देखना हो तो 'आर्य लोक वार्ता' के सम्पादकीय पढ़ लेना चाहिए।

सुन्दर कागज, साफ सुथरा मुद्रण, परिष्कृत भाषा द्वारा 'आर्य लोक वार्ता' जीवन में नई आशा, अभिलाषा जागृत करने में सक्षम है।

-गुरुप्रसाद मिश्र 'गांधी'
से.नि.प्रवक्ता, आर्य नगर, सीतापुर(उ.प्र.)

***

यज्ञ की महिमा

यज्ञ हमको सुपथ पर ले जाने का विशेष वाहन है। हमारे दोषों को दूर करने की औषधि है। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं इस गंधयुक्त पृथ्वी को धारण करने वाला परमात्मा हमारी बुद्धि को विमल करने वाला हो। संसार में दो प्रकार की शक्तियां काम कर रही हैं- एक शक्ति हमें मिला रही है, जोड़ रही है दूसरी शक्ति हमें हटा रही है और जोड़ भी रही है। पहली सुई का काम करती है और दूसरी कैंची का। मानव-संसार में पहली शक्ति का नाम प्रेम है या यज्ञ की भावना। द्वेष भाव ही अयज्ञ है या कैंची है। पर इन दोनों शक्तियों की मनुष्य को जरूरत है। यह दोनों शक्तियां मनुष्य की रक्षा करती हैं। स्वार्थ के कारण हमारा जीवन अयज्ञमय बन जाता है। इसलिए स्वार्थ पर विजय पानेके लिए हमें अपने संस्कारों को अच्छा कर अपने जीवन को बना सकते हैं। यह काम सुई का होता है- जोड़ना। और कैंची की शक्ति से अपने अप्रिय आचरण को दूर हटाना। अर्थात् हमारे जीवन में जो अशुभ है उस पर विजय पाना। ऋषि दयानन्द सरस्वती जी ने प्रतिदिन पांच यज्ञों को करने का विधान बनाया। इन्हें हम महायज्ञ की संज्ञा देते हैं। अभ्यास से ही हमारा स्वभाव सृष्टि अनुकूल बनताहै।

यज्ञ के कारण ही हमारे मानव शरीर के कोश बनते हैं-(1) अन्नमय कोश, (2) प्राणमय कोश (3) मनोमय कोश (4) विज्ञानमय कोश (5) आनन्दमय कोश। इन नामों से स्पष्ट होता है कि यज्ञ की भावना से हमें क्या प्राप्त होता है। जिनके बिना हमारा यह मानव शरीर चल ही नहीं सकता और आत्म उद्धार नहीं होता।

यज्ञ का विधान

स्तुति प्रार्थना उपासना मंत्र अर्थ सहित पढ़ना फिर स्वस्तिवाचनम् के 31 मंत्र का पाठ और शान्तिकरणम् के 28 मंत्रों का पाठ होता है। स्वस्ति आत्मा की उन्नति और शान्तिकरणम् शान्ति के लिए प्रार्थना करना। इन तीनों प्रकार के मंत्र पाठ के पश्चात् ही जल से आचमन करना चाहिए। यहां प्रायः भूल से सबसे पहले आचमन करते हैं फिर तीनों प्रकार के मंत्रों का पाठ करते हैं। दैनिक आहुतियों के बाद पूर्ण आहुति का क्रम इस प्रकार होना चाहिए-

अघारावाज्याहुति-2 मंत्र, आज्यभाग आहुति-2 मंत्र, व्याहृति मंत्र-4, स्विष्टकृत आहुति-1 मंत्र, मौन प्रजापतये-1, प्रधान होम आज्याहुति-4, अष्टाज्याहुति-8, (पवमाना) अर्थात् इस क्रम से 22 आहुतियों के पश्चात ही पूर्णाहुति देनी चाहिए, किसी और क्रम से देना अनुचित है। स्विष्टकृत की आहुति प्रधान होम में केवल एक बार ही होनी चाहिए- इसे प्रायश्चित आहुति से कभी नहीं पुकारना चाहिए। जल सिंचन से हम अनुकूल मति की प्रार्थना करते हैं ताकि इन भूलों को न करें और स्वामी दयानन्द सरस्वती की बताई विधि को अपना कर हम एक रूपता ला सकें।

-मदन मोहन जोशी
११७, पटेल नगर, आलमबाग, लखनऊ

***

धारावाहिक-(44)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

४ - सज्जनता का विकास

सुजनता से जनता की सभ्यता और स्वतंत्रता का विकास होता है। सुप्रसिद्ध भारतीय विद्वान् श्री राधाकृष्णन् ने अपने एक भाषण में कहा था कि 'व्यक्तिगत और सामाजिक अनुशासन के बिना स्वतंत्रता एक सुनहला स्वप्न-मात्र है।' विनय के बिना अनुशासन असंभव है। उसके बिना पारस्परिक एकता कैसे होगी? गले से गला मिलाने के लिए दोनों ओर से झुकना आवश्यक है। अहंकार से लोकशक्ति का संगठन नहीं हो सकता। क्रूरता से क्रूरता बढ़ती है और सहृदयता से सहृदयता- यह लोक का निश्चित नियम है।

संसार में सभी चाहते हैं कि दूसरे उनके प्रति विनयी हों, नम्र हों, सुशील शिष्टाचारी हों; अतएव उचित है कि सभी परस्पर विनयी, नम्र और सुशील हों। पारस्परिक सद्भाव इसी प्रकार हो सकता है। व्यास ने कहा है कि मनुष्य अपने लिए अन्य व्यक्तियों के द्वारा जिस कार्य का किया जाना नहीं चाहता, दूसरों के लिए उसे स्वयं भी वैसा कार्य नहीं करना चाहिए-

यदन्यैर्विहितं नेच्छेदात्मनः कर्म पूरुषः।
न तत्परेषु कुर्वीत जानन्नप्रियमात्मनः।।

-महाभारत

यही सज्जनों का सनातन धर्म है। शास्त्र का आदेश है कि प्रत्येक मनुष्य सज्जनों के मार्ग से चले और श्रेष्ठ पुरुषों के समान आचरण करे-'सतां धर्मेण वर्तेत क्रियां शिष्टवदाचरेत्'- महाभारत। शिष्टाचार से सौजन्य का विकास होता है। सौजन्य सौ अन्य वस्तुओं की अपेक्षा अधिक मूल्यवान है। इसके द्वारा मनुष्य दूसरों के हृदय को जीत लेता है और हृदय को जीत लेने से उनका सर्वस्व प्राप्त कर लेता है। दूसरों को अपने वश में करने का यह सरल, मृदु और अमाघ उपाय है-'जौ बांधे ही तोषु, तौ बांधौ अपने गुननि'-बिहारी। विनय-विनम्रता और सुशीलता से जो कार्य हो सकता है, वह बड़ी-बड़ी सेनाओं से भी असाध्य है। हमारे समय में ही गाँधी जी इसको अपने चरित्र से प्रमाणित कर चुके हैं। सार्वजनिक जीवन को सरल, सुव्यवस्थित एवं सुरक्षित बनाने के लिए विनय, नम्रता और सुशीलता का आश्रय लेना आवश्यक है।

५ - शील-विप्लव का दुष्परिणाम

आजकल सामाजिक जीवन में उच्छृंखलता, कर्कशता और नीचता देखने को मिलती है, उसका एक कारण सर्व साधारण में शील-विनय का अभाव है। व्यक्तिगत और सामाजिक अनुशासन ढीला पड़ गया है। निर्धन, नौकर और स्वार्थी लोग अवश्य ही विनय का अभिनय करते हैं, परन्तु स्वेच्छा से साधारणतया कोई किसी के अनुशासन में नहीं रहना चाहता। थोड़ा-बहुत समर्थ होते ही लोग सर्वप्रथम शील-विनय का ही परित्याग करते हैं। शिक्षित होकर शिष्ट, विनीत होना तो दूर रहा, प्रायः लोग अपने गुरु का अपमान करने में ही अपना गौरव समझते हैं। छोटा-मोटा पद पाकर भी लोग ऐंठने लगते हैं, रोब दिखाने के लिए बेचैन हो जाते हैं। दूसरों की पगड़ी उछालने में ही बहुत से लोग अपनी तारीफ समझते हैं। आज से बहुत बहुत पहले त्रिकालज्ञ मनीषियों ने इस युग के जो लक्षण लिखे थे, वे सार्वजनिक जीवन में स्पष्ट देखने को मिलते हैं। उदाहरणार्थ-''अभयप्रागल्भोच्चारणमेव पांडित्यहेतुः''-विष्णु पुराण;-निर्भय होकर धृष्टतापूर्वक बोलना ही पांडित्य का सेतु होगा। वाग्दुष्टता और अधोपहास के उदाहरण देने की आवश्यकता नहीं है। ईंट का जवाब पत्थर से देना आजकल की साधारण प्रथा है। दुर्विनीतता को लोग शूरता और विनम्रता को कायरता मानते हैं।

आजकल 'बिनु भय होय न प्रीति' की रीति बहु-प्रचलित है। लोग एक दूसरे को आशंकित करके अपने वश में करना चाहते हैं। बड़ों का विरोध करके अपना काम निकालना सहज समझा जाता है। अध्यात्म रामायण के अनुसार रावण ने भी इसी नीति का अनुसरण किया था। शूर्पणखा के मुख से राम की महिमा सुनकर उसने निश्चय किया कि मैं विरोध-बुद्धि से ही उनके पास जाऊँगा क्योंकि भक्ति के द्वारा भगवान् शीघ्र प्रसन्न नहीं होते-

'विरोधबुद्ध्यैव हरिं प्रयामि, द्रुतं न भक्त्या भगवान् प्रसीदेत्।' -अध्यात्म रामायण

ध्यान से देखिये तो इस समय कितने ही वाममार्गी मिलेंगे, जो कुतर्क, वाक्पारुष्य और कुचेष्टा द्वारा बड़े-बड़ों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। राजनीति के क्षेत्र में तो यही हो रहा है। लोग मार मार कर मनाना चाहते हैं; स्वयं नंगे, निर्लज्ज बनकर सभ्य पुरुषों को लज्जित करना चाहते हैं। प्रायः लोग दूसरों का तिरस्कार करके उनसे स्वयं सत्कार पाने की आशा करते हैं और उछल-कूद मचाकर पा भी जाते हैं।

शील-विनय के उल्लंघन का जो परिणाम होना चाहिए, वह प्रत्यक्ष है। स्वतंत्रता के स्थान पर स्वच्छन्दता की वृद्धि हो रही है और शान्ति के स्थान पर अशान्ति की। लोग आपे से बाहर होकर अपनी ही नहीं कुल और समाज की मर्यादा का भी खण्डन कर रहे हैं। चारों ओर असभ्यता, असन्तोष और असहनशीलता का वातावरण मिलता है। क्या इससे यह प्रमाणित नहीं होता कि सामाजिक जीवन को मर्यादित एवं सुसंस्कृत बनान के लिए सर्वसाधारण में विनय, नम्रता और सुशीलता की भावना का संचार करना परम आवश्यक है? इसक अभाव में धृष्टता बढ़ती ही है और धृष्टता से नैतिक भ्रष्टता।

६ - सज्जनता का ढोंग

सज्जनता का ह्रास एक प्रकार से और हो रहा है। उस पर भी ध्यान दीजिये। वास्तव में, शिष्टाचार का परित्याग लोग इसलिए नहीं करते कि वह अनावश्यक है। उसकी आवश्यकता का अनुभव सब करते हैं, किन्तु उसका पालन सहज नहीं है। सहज होता तो संसार में अशिष्टों की संख अधिक न होती । इसको कठिन किन्तु आवश्यक जानकर बहुत-से लोग भय, स्वार्थ या असमर्थता के कारण ऊपर से सभ्यता का ढोंग करते हैं। इनके कुछ उदाहरण देना यहां अप्रासंगिक न होगा-

(क) आजकल एक प्रकार के 'सभ्य' वे हैं जो अपने अधिकारी या अपने से बलवान् के आगे भीगी बिल्ली बने रहते हैं, किन्तु निर्बलों के आगे शेर हो जाते हैं। समाज के भय से ऐसे लोग बाहर सभ्यतापूर्ण आचरण करते हैं, परन्तु घर के भीतर 'ठोकर लगी पहाड़ की, फोड़ै घर की सिल' के चरितनायक बन जाते हैं।

(मनुष्य का विराट् रूप' से साभार, क्रमशः)

व्याख्यान माला (4)

अनन्त की खोज

-आनन्द गिरि-

एक पंखा बेचने वाला राजमहल के नीचे आवाजें लगा रहा था- ''पंखे लो पंखे, ऐसे पंखे जो सौ वर्ष में भी न टूटे।'' राजा को आश्चर्य हुआ। क्या ऐसे पंखे भी हो सकते हैं जो सौ वर्षों तक न टूटें? पंखे वाले को बुलाया गया। देखा तो पंखे बिलकुल सामान्य किस्म के थे। राजा को विश्वास न हुआ तो पंखे वाले ने कहा- 'मैं राज यही पंखे बेचने आता हूँ टूट जाय तो आप सजा दे सकते हैं।' पंखे का मूल्य था सौ स्वर्ण मुद्रायें। राजा के आदेश से एक पंख खरीद लिया गया। वह पंखा तीसरे दिन ही टूटने लगा। राजा ने पंखा बेचने वाले को बुलवाया और कहा-'अब तुम्हें सूली पर चढ़ाया जायेगा। जब तुम हमको धोखा दे सकते हो तो प्रजा को कितना ठगते होगे? तुम्हारे सौ वर्ष की गारंटी वाला पंखा तीसरे दिन ही टूट गया।' पंखे वाले ने उत्तर दिया-'राजन्! अवश्य पंखे के प्रयोग करने में त्रुटि रही होगी।' 'कैसी त्रुटि? क्या पंखा करने का कोई और भी तरीका हो सकता है?' 'हाँ, महाराज! वह तरीका जिससे पंखा सौ वर्ष तक चलता है।' पंखेवाले ने कहा। पंखेवाले ने पूछा-'जरा मुझे बताया जाय कि पंखे का प्रयोग कैसे किया गया?' सेवक बुलाया गया और उसने पंख करके दिखाया। वह बोला-'यह विधि पंखा करने की नहीं, पंखा तोड़ने की है। मेरा पंखा ऐसे काम में न लिया जाय।' आश्चर्यचकित होकर राजा ने पूछा-'तो बताओं कैसे काम में लिया जाय?' उसने कहा-'पंखे को एक स्थान पर गाड़ दिया जाय और आप स्वयं उसके आगे जोरों से हिलें।' (मन्द हास्य का स्वर)

ऐसे ही जड़तावादियों ने परम्पराओं को रूढ़ियाँ बनाकर स्थिर कर दिया। रूढ़ियाँ सिद्धान्त समझ ली गयीं। ये सिद्धान्त मनुष्य की उन्नति के लिये नहीं रहे बल्कि मनुष्य ही इन सिद्धान्तों की वेदी पर बलि कर दिया गया। इस सामाजिक विकृति और अव्यवस्था का मूल कारण सांस्कृतिक स्वरूप की विस्मृति है। आत्म विस्मृति के महारोग ने जीवन के प्रत्येक अंग को रुग्ण कर दिया। सामाजिक क्षेत्र में हम सांस्कृतिक संदर्भ से कटे तो ऐतिहासिक क्षेत्र में उस केन्द्र से कट गए जिस पर संस्कृति स्थित थी! संस्कृति कोई स्वयंभू सत्ता नहीं अपितु जीवन अवधारणा की अभिव्यक्ति है। जीवन की प्रयोजनीयता को प्रकट करती है और सभ्यता उसकी उपलब्धि की स्थूल पद्धति है। जीवन की अवधारणा, आस्तित्व का यथार्थ ज्ञान, वह धुरी है जिसके चारों ओर संस्कृति के मूल तत्व घूमते हैं। ऐतिहासिक क्षेत्र में हम इस अक्ष से हट गये। हम कौन हैं? हमारी भाषा क्या है? हमारा देश क्या है? इत्यादि मूलभूत तथ्यों को भी भूल गये। यह विवाद का विषय बन गया कि यह देश हमारा है या हम इसके लिये विदेशी हैं। इतिहास में इस भ्रम को अंग्रेजों ने पैदा किया। और हमारे देश के विद्वानों ने, इतिहासकारों ने, प्रतिवाद करना तो दूर रहा चुपचाप इस भ्रम को स्वीकार किया। अंग्रेज इतिहासकारों ने यह स्थापना की कि आर्य विदेशी हैं जिन्होंने भारत के मूल निवासी द्रविड़ों को परास्त करके अपना राज्य स्थापित किया। आर्यों का देश कुछ इतिहासकारों ने कहा- 'मध्य एशिया है तो किसी ने कहा कैस्पियन सागर का तट है।' कभी यह भी कहा गया कि 'उत्तरी ध्रुव आर्यों का मूल निवास स्थान है। 'इस झूठ की स्थापना के लिये तथ्यों को तोड़ा-मरोड़ा गया। वेदों के गलत अर्थ किये गये। इस षडयन्त्र की रचना आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय इंग्लैंड में की गयी। तत्कालीन अंग्रेजी हुकूमत ने विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग की स्थापना की। मैक्समूलर को अध्यक्ष बनाया गया। उसने वेदों के भ्रष्ट अर्थ करके हमारे पूर्वजों को असभ्य और जंगली सिद्ध करने का प्रयत्न किया। इतिहास मैक्समूलर के उस पत्र से परिचित है जिसमें उसने स्वीकार किया है कि 'उसके द्वारा वेदा का जो भाष्य किया गया है वह शिक्षित भारतीयों के मन से धर्म के प्रति श्रद्धा ओर विश्वास को नष्ट कर देगा और इस प्रकार भारत वर्ष में ईसाई धर्म के प्रचार की सम्भवनाएँ बढ़ जायेंगी। लार्ड मैकाले जिसने भारत में अंग्रेजी शिक्षा की नींव डाली इस षडयन्त्र का रचयिता था। उसकी यह प्रसिद्ध उक्ति है कि 'किसी राष्ट्र को नष्ट करना हो तो उसकी भाषा और इतिहास को बदल दो।' ऐसा व्यक्ति किसी गुलाम देश की शिक्षा को क्या रूप दे सकता है? आप स्वयं कल्पना करें। पत्नी को लिखा गया मैकाले का एक पत्र इतिहास में प्रसिद्ध है। जो इसके इरादे को प्रकट करता है। उसने लिखा- 'अंग्रेजी शिक्षा हिन्दू समाज में एक ऐसे वर्ग को जन्म देगी जो जन्म से भारतीय होगा किन्तु विचार और रुचियों में योरोपीय।' इस व्यक्ति ने भारत में अंग्रेजी शिक्षा का गठन किया और इतिहास को सोच समझकर बदलवाया। आप सोच रहे होंगे कि आखिर ऐसा क्यों किया गया? तो इसका उत्तर है कि जब विदेशी आक्रान्ता हमारे साहित्य और संस्कृति के सम्पर्क में आये, हमारे गौरवपूर्ण अतीत को देखा तो महसूस किया वह लोग अपेक्षाकृत भारतीयों के पिछड़ वर्ग के हैं जिनका पूर्व इतिहास गौरवमय नहीं है और न जिनके पास साहित्यिक उपलब्धियाँ हैं। उन्होंने अनुभव किया जब यह देश जागेगा, अपनी संस्कृति और इतिहास को देखेगा, उसे पराधीन नहीं रखा जा सकेगा। इसको गुलाम बनाये रखने के लिए आवश्यक है कि इसकी भाषा ओर साहित्य को नष्ट किया जाय। एंव इतिहास को उद्गम से काट किया जाय। लिहाजा आर्य शब्द जो गुण का वाचक था जातिवाचक बना दिया गया। जाति का आधार संस्कृति और धर्म न होकर रूप रंग निश्चित किया गया। आर्य वह है जो गौर वर्ण हो लम्बी नाक वाला और चौड़े ललाट वाला हेा। जो इससे भिन्न रूपरंग वाले हैं चाहे उसी धर्म और संस्कृति के मानने वाले क्यों न हों, उस जाति के नहीं हैं। काले रंग वाले जैसे कि दक्षिण भारत के लोगा हैं अथवा जनजातियाँ जो वर्ण में काली हैं द्रविड़ हैं। भारत के मूल निवासी यही हैं जिनके गौर वर्ण आर्यों ने परास्त करके अपने साम्राज्य की स्थापना की। गत सौ वर्ष ये यही इतिहास पढ़ाया जा रहा है। जिसके दुष्परिणाम अब स्वतंत्र भारत में अनुभव होने लगे हैं। आर्य शब्द की जाति पर व्याख्या ने भारतीय सांस्कृतिक एकता को भंग करने की स्थिति पैदा कर दी। दक्षिण भारत की 'द्रविड़मुनेत्रकड़गम' संगठन की यह मांग कि द्रविड़ संस्कृति उत्तर भारतीय संस्कृति से भिन्न है इसी स्थापना पर आधारित है। दुःख तो इस बात का है कि भारतीय इतिहासकारों ने इतिहास से

न तो कुछ सीखा है न भुलाया है। यह इतिहास के जानकार तो हैं किन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से शून्य हैं। तथाकथित ऐतिहासिक बुद्धि इतना भी नहीं सोच सकी कि इस भ्रष्ट स्थापना का राष्ट्र की सांस्कृतिक एकरूपता पर क्या प्रभाव पड़ेगा? विदेशी आकाओं की धूर्तता को ब्रह्म वाक्य मानकर इन्होंने स्वीकार किया। आज भी बेवकूफी को नहीं सुधारा गया है। भाषा के क्षेत्र में भी अंग्रेजों के द्वारा ऐसा ही भ्रष्ट कार्य हुआ। वेद जो मानव पुस्तकालय की प्राचीनतम पुस्तक है, जिससे संसार की सारी भाषाओं का जन्म हुआ है, के विषय में कहा गया कि इससे पूर्व एक और भाषा थी जिसका विकसित रूप वैदिक भाषा है। 'वेद वस्तुतः आदिम ग्रन्थ नहीं हैं'- मैक्समूलर ने ऐसी स्थापना की। इस धूर्तता की पुष्टि में उसने ऋग्वेद के अग्नि सूक्त के दूसरे मंत्र का दुरुपयोग किया। मंत्र में पड़े 'नूतनेरुत स...' पद का अर्थ नवीन ऋषि किया। उसने मंत्रार्थ किया कि 'हे अग्नि देव जैसे पूर्व ऋषियों ने तुम्हारी अर्चना की थी वैसे हम नए ऋषि भी करते हैं।' अर्थात् ऋग्वेद से पूर्व भी कोई ऋषि थे जो अग्निदेव की अर्चना करते थे। अतः ऋग्वेद प्राचीनतम कृति न होकर नवीन कृति है। तात्पर्य यह है कि एक राष्ट्र जिन मुद्दों पर गर्व कर सकता है उन सबको विवाद के अन्धकार में डाल दिया। 'कोढ़ में खाज' वाली कहावत चरितार्थ हो गयी। दम्भ और अज्ञान में डूबे भारतीयों का सर्वनाश करने के लिये इतिहास में विष मिला दिया गया। इस प्रकार हम अपने मूल इतिहास से कट गए और अपने राष्ट्रीय स्वरूप को भूल गये। एक संस्कृति के स्थान पर भिन्न-भिन्न संस्कृतियाँ फोड़े की तरह उठ आईं जिनमें विद्वेष और घृणा का मवाद भर गया।

मेरे मित्रों, हम जिस वर्तमान में जी रहे हैं जरा उसकी ओर देखो। हमारा वर्तमान अस्त-व्यस्त और असंतुलित है। सामाजिक सामंजस्य भंग हो गया है। आधुनिकता के नाम पर शाश्वत मूल्य तोड़े जा रहे हैं। परिवार टूटते जा रहे हैं। उदण्डता और आपाधापी को प्रगतिशीलता के नाम से बढ़ावा मिल रहा है। जीवन की बहुमुखता सिमट कर केवल दो बिन्दुओं पर आ गयी है। एक बिन्दु है रोटी और दूसरा है स्त्री। अर्थात् जीवन का दृष्टिकोण नितान्त भोगपरक है। भोग की तीव्रता से सारी समझ और विवेक को इन्द्रियों की तृप्ति में लगा दिया है। जीवनोन्नति तथा शान्ति के लिये अनिवार्य मूल्य केवल पुस्तकों के पृष्ठ पर बचे हैं। जिन्दगी जिन आदर्शों से संचालित है वे पशु आदर्श हैं। अविश्वास और स्वार्थपरायणता युग धर्म बन गये हैं। परिणामस्वरूप कोमल सम्बन्धों की पारस्परिक मधुरता, कड़ुआहट में बदल रही है। पिता-पुत्र, पति-पत्नी, गुरू-शिष्य, व्यक्ति-समाज इस सबके बीच घृणा और असन्तोष की खाई गहरी होती जा रही है। वैयक्तिक जीवन का बिखराव समाज और राजनीति पर हावी है। प्रत्येक क्षेत्र में तोड़-फोड़ और अराजकता क्रान्ति के नाम से चल रही है। *(क्रमशः)*

काव्यायन

जीवन-रत्न

❑डॉ. कैलाश निगम

हमने जिसके वास्ते जीवन गँवाया।
रत्न जीवन का न फिर भी ढूँढ पाया।।

चीर हरने के लिए जब दुष्ट आया
संकटों से मात्र ईश्वर ने बचाया।

स्वाभिमानी तेवरों को ढूँढिये मत
लोग चरणों में गिरे, मस्तक नवाया।

लोभ, सत्ता, गर्व, हिंसा और वैभव
समय पर होता रहा सबका सफाया।

उस तरफ है पुण्य, सज्जनता, भलाई
इस तरफ संसार की है मोह-माया।।

–4/522, विवेक खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ

सुदृढ़ सारथी

❑राजा भइया गुप्त 'राजाभ'

आज जरूरत देश की, मुखिया बने दिलेर,
राष्ट्रघातियों को सबक, सिखा सके बिन देर।
सिखा सके बिन देर, निराशा भाव मिटाये,
सबको लेकर साथ, प्रगति की राह दिखाये।
कह 'राजाभ' निकट लाये जो विजय मुहूरत,
उसी सारथी की भारत को आज जरूरत।।

मोदी भी इन्सान हैं, होंगे ही कुछ दोष,
किन्तु राष्ट्रहित के लिए, कभी न खोया होश।
कभी न खोया होश, भूमि से ऊपर आया,
किया स्वयं को सिद्ध, कार्य करके दिखलाया।
निज निष्ठा-दृढ़ता उसने जन मन में बो दी,
इस कारण सेआज लोकप्रिय इतने मोदी।।

–बी2/356, सेक्टर–ए, जानकीपुरम, लखनऊ

तो कोई बात हुई!

❑नरेन्द्र भूषण

जलकर खुद रोशनी करो, तो कोई बात हुई।
अंधियारा कुछ दूर करो, तो कोई बात हुई।

हस्ताक्षर पीड़ा के, चेहरे पर भी दिखते हैं,
दिल के जख्म, व्यथा अपनी, अश्कों से लिखते हैं
कभी पढ़ें, औरों के दुःख, तो कोई बात हुई।
शाम हुई बूढ़ी माँ पूछे बेटा घर आया क्या?
गया सबेरे से, दिन भर कुछ, उसने खाया क्या?
कभी पूछ ले बेटा भी, तो कोई बात हुई।
अपनी फटी हुई साड़ी खुद ही बखियाती माँ
डोर डाल दे सूई में, सबसे रिरियाती माँ,
कभी पिरो दें हम धागा, तो कोई बात हुई।
चश्मा पत्नी को मैंने मँहगा दिलवाया है
अपने में भी फ्रेम बहुत अच्छा लगवाया है
कभी बदल दें माँ का भी, तो कोई बात हुई।
जिसका बोयें बीज, फूल उसका ही खिलता है
कैक्टस की हो पौध, शूल बस हमको मिलता है
कभी समझ पायें हम-तुम, तो कोई बात हुई।

–सी–2/182, सेक्टर–एफ, जानकीपुरम, लखनऊ

सोच रही शाम!

❑उमेश 'राही'

चंदा के घर से आया पैगाम,
जाऊँ या न जाऊँ,
सोच रही शाम!
अंधियारा आज रहा
नयनों के कोर!
मधुवन है बांध रहा
अलकों के छोर!!
तारों ने भेजा है निशिगन्धी जाम,
पी लूँ या लौटा दूँ,
सोच रही शाम!
वसुधा की माँग भरी,
रातों की रानी महकी!
सपनों के खग बोले-
गीतों की वंशी चहकी!!
अजनबी बहारों के याद रहे नाम,
किसको बुलवाऊँ,
सोच रही शाम!
गगरी ले लौट रही,
अनब्याही अभिलाषा!
सहम सहम जाती है-
जीवन की परिभाषा!!
अधरों पर प्यास लिये पंछी तमाम,
किसको दुलराऊँ,
सोच रही शाम!

–मोतीनगर, लखनऊ

स्वाति-सुअन

❑डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर

सीप की गोद में पलता है जब,
स्वाति-सुअन बनता है वह तब।

नाम वफा का लेना मत अब,
मतलब के हैं यार यहाँ सब।

रौशन रहते हैं जिनके घर,
रहते अँधेरे उनसे खुश कब?

रहज़न का था खौफ़ हमें पर,
लूट लिया रहबर ही ने सब।

उससे कर ले ते हैं बातें,
रखते हैं हम मौर मगर लब।

हाहाकार मचा कंसों में,
सुनकर श्याम की मुरली फिर अब।

'नासिर' ब्राह्मण शेख सभी का,
पालनहार वही है इक रब।

–जी–02, लोरपुर रेज़ीडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

हर्ष-चतुष्पदी

नमस्ते!

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

एकता का है सुखद साधन- नमस्ते!
सभ्यता का एक आराधन- नमस्ते!
मनुजता का सुरुचि संस्थापन- नमस्ते!
विश्व भर में व्याप्त अभिवादन- नमस्ते!

है नमस्ते में छिपा वरवेश अपना,
है नमस्ते में छिपा संदेश अपना,
है नमस्ते में छिपा आदेश अपना-
है नमस्ते में छिपा यह देश अपना।।

–अवध मोटर वर्क्स सिविल लाइन्स फैजाबाद

कालजयी काव्य

जब वर्षा शुरू होती है

❑केदार नाथ सिंह

इस वर्ष साहित्य का सर्वोच्च 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' डॉ.केदार नाथ सिंह को प्राप्त हुआ। हार्दिक बधाई!

जब वर्षा शुरू होती है
कबूतर उड़ना बन्द कर देते हैं
गली कुछ दूर तक भागती हुई जाती है
और फिर लौट आती है

मवेशी भूल जाते हैं चरने की दिशा
और सिर्फ रक्षा करते हैं उस धीमी गुनगुनाहट की
जो पत्तियों से गिरती है
सिप् सिप् सिप् सिप्

जब वर्षा शुरू होती है
एक बहुत पुरानी सी खनिज गंध
सार्वजनिक भवनों से निकलती है
और सारे शहर में छा जाती है

जब वर्षा शुरू होती है
तब कहीं कुछ नहीं होता
सिवा वर्षा के
आदमी और पेड़
जहाँ पर खड़े थे वहीं खड़े रहते हैं
सिर्फ पृथ्वी घूम जाती है उस आशय की ओर
जिधर पानी के गिरने की क्रिया का रुख होता है।

डॉ. श्यामसुन्दर मिश्र 'मधुप' के प्रति

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

[आधुनिक अवधी साहित्य के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर, आर.एम.पी.कालेज, सीतापुर के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, मानवीय सद्गुणों की अमूल्य निधि– डॉ.मधुप का बीते दिनों निधन हो गया। आ.लो.वा. की विनम्र श्रद्धांजलि!]

मेरे श्यामसुन्दर 'मधुप' तुम गए कहाँ
अभी पूर्ण नहीं हुआ कविता का रस-पान।
सीतापुर की धरा को तुमने ही धन्य किया,
अवधी में रचे ग्रन्थ, भाषा का बढ़ाया मान।
गद्य-पद्य, शोध की सुकृतियाँ अनेक दी हैं,
चिरकाल जीवी रम्य साहित्यिक-अवदान।
बच्चों के लिए भी साहित्य-कोश भर दिया,
कीर्तिशेष गूँजेगा 'विनम्र' सदा यश-गान।।

धन्य श्यामसुन्दर 'मधुप' अवधी नरेश,
स्नेहभाव सादगी में अतिशय सरल थे।
कितनों को स्नेहाशीष देकर बनाया कवि,
वाणी स्वाभिमानी किन्तु हृदय से तरल थे।
काव्य-कृति-कलशों में सुधा रस भर दिया,
स्वस्थ हो समाज अस्तु पीते वे गरल थे।
विचलित हुए नहीं कभी भी राष्ट्र-भावना से,
चिन्तन सघन किन्तु सदय विरल थे।।

–'117, आदिल नगर, पोस्ट–विकास नगर, लखनऊ–226022

पर्यावरण संरक्षण

❑देवकी नन्दन 'शान्त'

हमें आकाश, धरती, जल, पवन अग्नि ने घेरा है
हमारी श्वास में इन पाँच तत्त्वों का बसेरा है।

प्रदूषित वायु-जल हो जाये तो फिर 'शान्त' क्या होगा
नज़रके सामने ये ये सोच के छाया अँधेरा है।

प्रदूषण संस्कृति का पीढ़ियों को नष्ट कर देगा
कभी ये सोचा कि ये संसार तेरा है न मेरा है।

लगाकर नित नई हर पौध को हम वृक्ष बनने दें
पथिक देखेंगे है तो धूप पर साया घनेरा है।

दिवस-पर्यावरण हर वर्ष ये संदेश दे जाता
हो लम्बी रात कितनी भर मगर आगे सवेरा है।।

–इन्दिरा नगर, लखनऊ

राजस्थान-समाचार

स्वाति बाहेती को शोध उपाधि

कोटा की आर्यपुत्री स्वाति बाहेती को पी-एच.डी. की उपाधि 'राजनीति विज्ञान में राजस्थान विधानसभा में विपक्ष की भूमिका' विषय पर राजकीय महाविद्यालय कोटा की प्रोफेसर श्रीमती मंजू मालव के निर्देशन में प्रदान की गई। आर्य समाज के जिला प्रधान श्री अर्जुनदेव चढ्ढा ने बताया कि आर्य समाज रामपुरा के प्रधान व जिला सभी के मंत्री कैलाश बाहेती की सुपुत्री स्वाती बाहेती प्रारम्भ से ही मेधावी छात्रा रही है। स्वाती बाहेती कोटा के जेडीबी गर्ल्स कॉलेज की सत्र २२०४-०५ में छात्रसंघ की अध्यक्षा भी रह चुकी है। स्वाती बाहेती ने बताया कि मेरे स्व.दादाजी बिरधीचंद बाहेती की प्रेरणा एवं आशीर्वाद ने तथा आर्य समाज के संस्कारों ने मुझे उच्च अध्ययन के लिए प्रेरित किया है। मेरी यह उपाधि आर्य समाज के स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने के कार्यों का ही प्रतिफल है।

स्वाती बाहेती को शोध कार्य पूर्ण होने पर आर्य समाज के अर्जुनदेव चढ्ढा, कंवरलाल सुमन, जे.एस.दुबे, हरिदत्त शर्मा, रामप्रसाद याज्ञिक, डॉ.के.एल.दिवाकर, अग्निमित्र शास्त्री, ओमप्रकाश तापड़िया, रामदेव शर्मा, रामकृष्ण बलदुआ, रामदेव शर्मा, नरदेव आर्य, श्रीचंद गुप्ता ने शुभकामनाएँ प्रदान करते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

प्रतिभावान जरूरतमंद बच्चों को आर्य समाज ने दी शिक्षा सामग्री

कोटा, ३० मई। जरूरतमंद एवं प्रतिभावान छात्रों को शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से दैनिक समाचार पत्र 'दैनिक भास्कर' द्वारा चलाये जा रहे मिशन शिक्षा अभियान के अन्तर्गत आर्य समाज कोटा ने सहयोग देकर अपनी जिम्मेदारी निभाई। इसके अन्तर्गत आर्य समाज कोटा ने जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्मिलित तत्वावधान में दैनिक भास्कर कार्यालय कोटा में जाकर शिक्षण सामग्री भेंट की। आर्य समाज कोटा से जिला सभा प्रधान अर्जुन देव चड्ढा, जिला मंत्री कैलाश बाहेती, आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, डॉ.के.एल.दिवाकर, जे.एस.दुबे प्रधान आर्य समाज विज्ञान नगर, रघुराज सिंह प्रधान आर्य समाज तलवंडी, राम प्रसाद याज्ञिक तथा राजीव आर्य दैनिक भास्कर समाचार पत्र के कोटा स्थित कार्यालय पहुंचे और मिशन शिक्षा अभियान के प्रभारी को शिक्षण सामग्री भेंट की। इस अवसर पर जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि सभी को शिक्षा मिले इस उद्देश्य से आर्य समाज द्वारा विगत कई वर्षों से कोटा शहर के सरकारी तथा ग्रामीण क्षेत्र के अनेक सरकारी विद्यालयों में जाकर जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को इसी प्रकार शिक्षण सामग्री दी जा रही है।

(अरविन्द पाण्डे, कार्यालय सचिव)

आर्य समाज द्वारा पूनम सूरी का सम्मान

कोटा, १४ जून। आर्य समाज का प्रचार प्रसार कर आमजन को यज्ञ के महत्त्व की जानकारी तथा उन्हें यज्ञ कार्यक्रमों से जोड़ें- उक्त विचार डीएवी कालेज प्रबन्ध कार्यसमिति के चेयरमैन श्री पूनम सूरी ने डीएवी स्कूल में आर्य समाज कोटा जिला सभा के प्रतिनिधिमण्डल से शिष्टाचार भेंट में कहे। उन्होंने कहा कि डीएवी विद्यालयों में आर्य संस्कारों को बढ़ावा देने के लिए डीएवी स्कूलों के सभी प्राचार्यों एवं अध्यापकों को यज्ञ करने का प्रशिक्षण दिया गया है। राष्ट्रोत्थान में आर्य विचारधारा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी। इस अवसर पर आर्य समाज जिला सभा के प्रतिनिधिमंडल जिसमें जिला अर्जुनदेव चड्ढा, जिला मंत्री कैलाश बाहेती, कोषाध्यक्ष जे.एस.दुबे, पूर्व उपप्रधान रामप्रसाद याज्ञिक, डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता ने डीएवी स्कूल में आर्य शिरोमणि पूनम सूरी को राजस्थानी साफा पहनाकर मोतियों की माला व गायत्री मंत्र से सुसज्जित रेशमी पटका पहनाकर स्वस्ति मंत्रोच्चार के साथ सम्मान किया गया। श्री पूनम सूरी को जिला सभा की और से ओ३म् का स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर श्रीमती मणि सूरी, आर्य समाज के प्रतिनिधि व डीएवी के रीजनल डायरेक्टर एम.एल.गोयल, मैनेजर राकेश कुमार, प्रिंसिपल ए.के.लाल, श्रीमती सरिता रंजन गौतम आदि उपस्थित थे। श्री पूनम सूरी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए निर्धन, असहायों की और अधिक गति से सेवा कार्य करने की प्रेरणा दी।

(अर्जुनदेव चड्ढा जिला प्रधान)

सात दिवसीय ध्यान योग शिविर

कोटा, ६ जून २०१४। शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति का सर्वोत्तम साधन ध्यान एवं योग ही है। इससे मन के विकार दूर होते हैं तथा अन्तर्निहित आनन्द की अनुभूति होती है। उक्त विचार आर्य समाज विज्ञान नगर में सम्पन्न हुए साधना एवं ध्यान योग शिविर के समापन समारोह के अवसर पर कार्यक्रम की मुख्य अतिथि अमरोहा से पधारी डा.वीना रस्तोगी ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि वर्तमान में महिलाओं में साधना और ध्यान योग की ओर रूझान बढ़ा है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि प्रायः देखने में आता है कि लोग केवल शरीर को स्वस्थ रखने के लिए ही योग करते हैं, किंतु इसे ध्यान तक पहुंचा कर आर्य समाज ने योग का वास्तविक परिचय कराया है।

सीतापुर-समाचार

रसवन्ती काव्य संध्या

०८.०७.२०१४। हिन्दी साहित्य परिषद् के ब्रह्मपुरी सीतापुर स्थित कार्यालय में परिषद् अध्यक्ष श्री अवधेश शुक्ल 'अवधेश' के ६८वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में रसवन्ती काव्य संध्या का आयोजन किया गया। जनपद की तेरह संस्थाओं द्वारा श्री शुक्ल को सम्मानित किया और उन्हें बधाइयाँ दीं। श्री गोपाल सागर, रामदास वैश्य, अम्बरीश तथा दिनेश 'राही' इत्यादि कवियों का काव्यपाठ हुआ तथा युवाकवि अनुराग को 'सरस्वतीश्री' सम्मान प्रदान किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कवयित्री विनोदिनी रस्तोगी ने की।

संक्षिप्त समाचार

दि.१३.०६.२०१४ को आर्य समाज खेलाई पुर, सीतापुर द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द सरस्वती पुस्तकालय का वार्षिक उत्सव प्रातः देवयज्ञ के साथ आरम्भ हुआ। दोपहर व सायं वेला में प्रेमचन्द्र आर्य व कु. बृजेन्द्री आर्या के भजन एवं प्रवचन हुए। सायंकालीन वेला में पं.नेम प्रकाश आर्य ने धनुर्विद्या का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में ग्रामीणों की पर्याप्त उपस्थिति रही। इस अवसर पर श्री नेत राम आर्य ने एक कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया जिसमें भगवती प्रसाद शर्मा, शिवचरन लाल आर्य, डा.अवधेश, प्रेम प्रकाश व अनेक महिलाओं की उपस्थित रही। कार्यक्रम का संचालन रामेन्द्र आर्य शिक्षक ने किया।

डॉ.श्यामसुन्दर मिश्र 'मधुप' का देहावसान

आर.एम.पी.स्नातकोत्तर महाविद्यालय सीतापुर के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं अवधी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर डॉ.श्यामसुन्दर मिश्र 'मधुप' लगभग ६२वर्ष की आयु पूर्ण कर २६ मई २०१४ को दोपहर परलोक की महायात्रा पर प्रयाण कर गये। उनके निधन पर नगर के गण्यमान्य राजनेताओं, साहित्यकारों, समाजसेवियों, पत्रकारों आदि ने शोकांजलि अर्पित की।

डॉ.मधुप ने लगभग दो दर्जन कृतियों से महान साहित्यिक अवदान दिया जिनमें 'जगि रहे गांधी केर सपन', 'हिन्दुस्तान की झांकी', 'घास के घर ऊंधे', 'अवधी की राष्ट्रीय कविताएं', 'कुछ हवा बदलती जाती है', 'पानी से पत्थर', 'अवधी काव्य धारा', 'नवीन बरवै' आदि उल्लेखनीय हैं। उन्हें बाल साहित्यकार के रूप में भी पर्याप्त ख्याति मिली। उनकी 'नवभारत निर्माता', 'जय जय हिन्दुस्तान की' 'बापू जी कहते हैं बच्चों!', 'बच्चों का गांधीग्राम' आदि पुस्तकें बाल साहित्य से संबन्धित हैं। उनकी अप्रतिम साहित्य सेवा के लिए उन्हें उ.प्र.हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा सूर नामित पुरस्कार तथा साहित्य भूषण के अतिरिक्त विभिन्न साहित्यिक सामाजिक, आध्यात्मिक संस्थाओं द्वारा अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए।

'आर्य लोक वार्ता' परिवार परम पिता परमात्मा से यह प्रार्थना करता है वह दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति तथा शोकसंतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

(गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र')

आर्य्य लोक वार्ता

'ऋत्विक्-मंडल'

(प्रतिवर्ष १२०० रु. या अधिक सहयोगकर्त्ता)

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, ज्वालापुर, **हरिद्वार**; विद्यासागर फाउण्डेशन, **मेरठ**; अम्बिका प्रसाद एडवोकेट, **लखनऊ**; आनन्द कुमार आर्य, **कोलकाता**, श्रीमती वीना उतरेजा, राजाजीपुरम, **लखनऊ**; पाल प्रवीण, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती कमलेश पाल, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती वीना कटियार **फर्रूखाबाद**; श्रीमती प्रमोद कुमारी, अलीगंज, **लखनऊ**; जगदीश खत्री, **लखनऊ**, ओजोमित्र शास्त्री, महावीरगंज, **लखनऊ**; अभिषेक, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती गीतांजलि अलीगंज **लखनऊ**; श्रीमती मिनी स्वरूप, **नई दिल्ली**, कर्नल पाल प्रमोद, **मेरठ** अरविन्द कुमार, आर्कीटेक्ट, **लखनऊ**; श्रीमती शालिनी कुमार, आर्कीटेक्ट, **लखनऊ**; श्रीमती नीरजा सिह, प्रधानाचार्या, टाण्डा, **अम्बेडकरनगर**; श्रीमती मधुर मंडारी **नई दिल्ली**; रमेश चन्द्र त्यागी, **लखनऊ**; ओमप्रकाश सेवक, **लखनऊ**; प्रो.आनन्द वैद्य, **लखनऊ**; पीयूष गुप्त, सिंगापुर; श्री रमनलाल अग्रवाल, नजीराबाद, **लखनऊ**; श्रीमती प्रकाश अग्रवाल, **बरेली**; कृष्ण स्वरूप चौधरी, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती सुन्दरी दरियानी, **लखनऊ**; ले.कर्नल चन्द्रमोहन गुप्त, **लखनऊ**; डॉ.सी.वी.पाण्डेय, सर्वोदय नगर, **लखनऊ**; अखिल मित्र शास्त्री, महावीरगंज, **लखनऊ**; श्रीमती प्रमिला पाल, मवाना, **मेरठ**; निशीथ कंसल, विवेकानन्दपुरी, **लखनऊ**; दीपक कुमार दर्शन, अमीनाबाद **लखनऊ**; बी.एन.टण्डन, **बहराइच**; अनूप टण्डन, **मेरठ**; श्रीमती कुसुम वर्मा, इन्दिरा नगर **लखनऊ**; वेद प्रकाश बटुक, **मेरठ**; सतपाल महाजन, **गुड़गाँव**; प्रणव श्रीवास्तव, **अहमदाबाद**; नरेन्द्र भूषण, जानकीपुरम, **लखनऊ**; आर सी यादव, सत्या क्लीनिक इन्दिरा नगर, **लखनऊ**; इ.प्रेमचद, गोविन्द विहार, **लखनऊ**; चौधरी रणवीर सिंह प्रधान, आर्य समाज, **सीतापुर**; श्रीमती मंजू रेलन, गोमती नगर **लखनऊ**; श्री कृष्ण सिह अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती मनीषा त्रिवेदी **दुबई**; कौशल किशोर श्रीवास्तव, नया तिलक नगर **लखनऊ**; अर्जुनदेव चढढा कोटा **राजस्थान**; नरसिह पाल एडवोकेट राजीव नगर **लखनऊ**; नरदेव आर्य एल.डी.ए कालोनी **लखनऊ**; श्रीमती मीना दीक्षित, गोमती नगर **लखनऊ**; श्रीमती इन्द्रा शर्मा, डालीबाग **लखनऊ**; इ.जे.पी.अग्रवाल, गायत्रीलोक कनखल, **हरिद्वार**।

लखनऊ-समाचार

अनुकरणीय !

४१७/१०, नेवाजगंज, चौक, लखनऊ में श्री वी.एस.पाण्डे एवं श्रीमती रमा आर्य अपने अपने विभागों से सेवानिवृत्त होकर अपने स्वनिर्मित मकान में निवास करते हैं। यहां से चार कदम की दूरी पर उनके कनिष्ठ पुत्र श्री प्रत्यूषरत्न पाण्डे (मंत्री, आर्य उपप्रतिनिधि सभा) सपरिवार रहते हैं। दोनों मकानों के बीच दूरी कोई ज्यादा नहीं है फिर भी माता-पिता की रात्रि में आकस्मिक सेवा-सुश्रूषा में इतनी दूरी भी बाधक होते देख- श्री प्रत्यूष ने अपने माता-पिता के साथ ही रहने का निर्णय लिया।

अस्तु, पैतृक मकान में थोड़ा निर्माण कार्य करा कर उन्होंने गत १६ जुलाई को यज्ञ हवन के साथ उक्त निर्णय को कार्यरूप में परिणत कर दिखाया। माता-पिता की सेवाभक्ति के इस सत्साहस की सभी ने भूरि भूरि सराना की। श्री ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी (पूर्व प्रधान, आर्य समाज, चौक) ने आशीर्वाद दिया। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने यज्ञ सम्पन्न कराया तथा निम्नांकित छंद द्वारा ४१७/१० आवास के ऐतिहासिक और मानवतावादी महत्व को रेखांकित करते हुए अपनी भावों की अभिव्यक्ति की-

गंज नेवाज का गेह दशांक जो,
धैर्य की धर्म की देहली है,
मख धूम्र की सौरभ-गंध लिए,
शुचि शीतल शान्त समीर भली है।
जहां शारदा के स्वर गूंजते हैं,
कवि-कोकिल-कूजित काकली है।
जिन्हें काल प्रवाह ने फेंक दिया,
उन पीड़ितों की शरण स्थली है।

अनन्त अनुनाद काव्य गोष्ठी

१५.१६.१४। साहित्यिक संस्था अनन्त अनुनाद की मासिक काव्यगोष्ठी संस्था के महामंत्री सुनील कुमार वाजपेयी के निवास विकास नगर पर आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता श्री नरेन्द्र भूषण ने की तथा गोष्ठी के विशिष्ट अतिथि थे अशोक कुमार पाण्डेय 'अशोक'। गोष्ठी में सुनील कुमार वाजपेयी तथा घनानन्द पाण्डेय 'मेघ' द्वारा माँ वीणापाणि की वन्दना के पश्चात् विपिन कुमार वाजपेयी, शिव शर्मा शुक्ला, अनिल श्रीवास्तव, सम्पति कुमार मिश्रा, भ्रमर वैसवारी, चेतराम अज्ञानी, गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', नरेन्द्र भूषण, भोजपुरी कवि कृष्णानन्द राय आदि कवियों के अतिरिक्त श्रीमती शोभा दीक्षित तथा अशोक कुमार पाण्डे 'अशोक' ने काव्यपाठ किया। कार्यक्रम का संचालन हरिप्रकाश 'हरि' ने किया। *(विनम्र)*

पर्यटक जयन्ती एवं सम्मान समारोह

३१.०५.१४। अखिल भारतीय नवोदित साहित्यकार परिषद लखनऊ के तत्वावधान में साहित्यकार एवं संस्था संस्थापक पं.रामनारायण त्रिपाठी 'पर्यटक' की जयन्ती एवं सम्मान समारोह प्रेस क्लब में आयोजित हुआ जिसमें डा.ओम प्रकाश पाण्डे अध्यक्ष, महन्त दिव्यागिरि मुख्य अतिथि, राजेश राय विशिष्ट अतिथि तथा प्रो.नेत्र पाल सिंह मुख्य वक्ता के रूप में विराजमान थे। कार्यक्रम में रंगनाथ मिश्र 'सत्य', विनय दीक्षित, अरविन्द त्रिवेदी शाश्वत, गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', राजाभइया गुप्ता 'राजाभ', आलोक चतुर्वेदी, महेश पाण्डे, आभा मिश्रा, रामचन्द्र शुक्ल आदि मनीषियों की उपस्थिति रही। संचालन विजय प्रकाश त्रिपाठी ने किया।

हरदोई-समाचार

आर्य समाज सण्डीला

आर्य समाज सण्डीला के तत्वावधान में श्रावणी से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया जायगा, साथ ही श्रावणी पर्व से लेकर १५ दिनों तक सरल संस्कृत शिक्षण पखवारा आचार्य पुष्पमित्र शास्त्री के संयोजन में मनाये जाने का निश्चय किया गया है। संस्कृत पखवारे में वाद विवाद प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता सहित अन्य कई प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की जायेंगी, जिसमें विजेताओं को समुचित पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे। आयोजन में सरल संस्कृत शिक्षा समिति, लखनऊ के पदाधिकारियों के भी सम्मिलित होने की आशा है। इस आयोजन से जनता को अधिकाधिक संख्या में सम्मिलित होकर लाभ उठाना चाहिए। *(श्रीकान्त, मंत्री)*

लखनऊ-समाचार

पाल प्रवीण अमेरिका यात्रा पर

वैदिक विचारधारा के प्रवक्ता एवं 'आर्य लोक वार्ता' के प्रतिष्ठापक तथा अलीगंज वैदिक सत्संग योगाश्रम के संस्थापक एवं संचालक श्री पाल प्रवीण को ३१ जुलाई से ३ अगस्त २०१४ तक न्यूजर्सी, अमेरिका में आयोजित २४वीं अन्तर्राष्ट्रीय कांफ्रेस आर्य महासम्मेलन में व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया गया है। सम्मेलन में आप 'Vedas- Source of Science, Sprituality and healthy living'(विज्ञान, अध्यात्म तथा स्वस्थ जीवन के स्रोत-वेद) विषय पर विचार प्रस्तुत करेंगे। श्री पाल प्रवीण को इस महत्त्वपूर्ण विदेश यात्रा के लिए शुभकामनाएँ एवं बधाई! *सौजन्य-डॉ.रमेश गुप्त एवं भूषण वर्मा)*

पर्यावरण गोष्ठी

१०.०६.१४- अलीगंज वैदिक सत्संग योगाश्रम के तत्वावधान में आयोजित पर्यावरण गोष्ठी में जाने माने पर्यावरणविदों ने भाग लिया। श्रीमती आभा द्विवेदी (भारत दूरसंचार विभाग) ने साहित्य के माध्यम से ग्रामों एवं नगरो को पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाने पर जोर दिया। सिद्धार्थ द्विवेदी(कर्नाटक) ने प्रदूषण निवारण पर बल दिया। श्री शंकर माथुर ने यज्ञ हवन की महत्ता का प्रतिपादन किया। गोष्ठी की अध्यक्षता श्री आर.एस.यादव (से.नि.मुख्य महाप्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक) ने की। गोष्ठी में श्रीमती प्रमोद कुमारी एवं श्रीमती आदर्श गुप्ता ने सुमधुर भजनों का गायन किया। श्री सेवकराम आर्य, अभिषेक, शशि रस्तोगी, कमलेश पाल, गीतांजलि, कु.देविका, श्रीमती माथुर की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

पावस प्रकृति काव्य गोष्ठी

०७.०७.२०१४, ज्ञान प्रसार संस्थान, लखनऊ। १/१३७, विवेक खण्ड, गोमती नगर में श्री महेशचन्द्र द्विवेदी एवं श्रीमती नीरजा द्विवेदी के सौजन्य ने एक ऐसा साहित्यिक वातावरण निर्मित कर दिया है; जहाँ पहुँचकर व्यक्ति शान्ति और संतोष का अनुभव कर सकता है। एक ऐसी ही सरस काव्यगोष्ठी का आयोजन हुआ; जिसका केन्द्रीय विषय था-प्रकृति। फलतः बादलों की आवाजाही और लुकाछिपी के बीच प्रकृति-पर्यावरण के अस्तित्व को लेकर सुन्दर रचनाएँ पढ़ी गईं। लखनऊ के गौरव के अनुरूप यह गोष्ठी अपने ढँग की थी।

'बख्शी दीदी' के सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण तथा नीरजा द्विवेदी की 'राग दरबारी' में सधी हुई वाणी वन्दना के पश्चात् शास्त्रीय संगीत की गायिका कमला देवी ने प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत की अमर रचना 'छोड़ द्रुमों की मृदुछाया' सुनाकर महाकवि की स्मृति को सजीव बनाया। साधुशरण वर्मा 'शरण' ने 'पेड़' शीर्षक रचना पढ़ी। अर्चना जी ने 'गुलमर्ग', अलका प्रमोद ने 'रिमझिम', सुधा जी ने 'प्रेम बहीखाते में लिखकर लेखा जोखा मत रखना', डॉ.सुरेश प्रकाश शुक्ल ने 'आदिगंगा', डॉ.मिर्जा हसन नासिर ने 'बादल', अशोक शर्मा ने गीत, डॉ. वेद प्रकाश आर्य ने 'परिचय', श्री महेशचन्द्र द्विवेदी ने प्रकृति सौन्दर्य को दार्शनिक अन्दाज में पेश किया। मनोज श्रीवास्तव ने ओजपूर्ण गीत सुनाया तो डॉ.सुरेश ने हिन्दी भाषा को ऐतिहासिक संदर्भ प्रदान किया। रंगनाथ मिश्र 'सत्य' ने अगीत रचना के साथ गीति रचना का भी रसास्वादन कराया। गोष्ठी की सरसता और सुस्वाद को स्वल्पाहार ने और भी रुचिकर बना दिया।

नामकरण संस्कार

१३.०७.२०१४, शिवविहार कालोनी, जानकीपुरम, लखनऊ। आर्य समाज गोनी (हरदोई) के मंत्री श्री सुरेश तिवारी के सुपुत्र चार्टर्ड एकाउण्टेन्ट श्री दिवाकर तिवारी एवं सुप्रिया तिवारी के नवजात शिशु का नामकरण संस्कार वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ। डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न इस संस्कार में समस्त पारिवारिक जनों- प्रभाकर तिवारी, रत्नाकर तिवारी, राकेश, सरोज शुक्ल, सुमन, मनु, दीपक, बंटी, अरविन्द कुमार शुक्ल एवं वर्मा जी उपस्थित थे। यज्ञ में सुरेश तिवारी तथा उनकी धर्मपत्नी सुशीला देवी के अलावा श्रीमती किरन पाण्डे, ध्रुव कुमार पाण्डे, प्रखर, निधि, राकेश मिश्र(मीनापुर) इत्यादि ने आहुतियाँ दीं।

बालक का नाम 'अर्णव कुमार' रखा गया; जिसकी सुंदर व्याख्या आचार्य द्वारा की गई। संस्कार की सुव्यवस्था से जो भी उपस्थित थे, प्रभावित हुए।

शोक समाचार

स्व.आचार्य कुन्दनलाल आर्य के सुपुत्र अरविन्द शर्मा का लम्बी बीमारी के बाद २४.०६.१४ को प्रातः ७.१५ पर निधन हो गया। अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीति से आलमबाग शृंगारनगर अंत्येष्टि स्थल पर आर्य समाज आदर्श नगर द्वारा सम्पन्न कराया गया। २४ जून से २७ जून तक प्रतिदिन आपके निवास स्थान पर शान्ति यज्ञ होता रहा जिसे श्री रुद्र स्वरूप तथा श्री सतीश निझावन ने सम्पन्न कराया। २७ जून को शोक सभा आर्य समाज मन्दिर आदर्श नगर में आयोजित हुई जिसमें लखनऊ की विभिन्न समाजों के पदाधिकारियों तथा सदस्यों ने भाग लिया। आचार्य संतोष वेदालंकार, अखिलेश शास्त्री तथा प्रताप कुमार साधक ने अपने विचारों से श्रद्धासुमन अर्पित किये। साथ ही आर्य समाज आदर्श नगर के मंत्री श्री सतीश निझावन ने समाज की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की।

वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज आदर्श नगर के तत्वावधान में १४ से १७ अगस्त २०१४ तक वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम के पूर्व १० से १३ अगस्त २०१४ तक स्थानीय निवासियों को जागृत करने हेतु प्रभात फेरी निकाली जायेगी तथा पत्रक वितरण किया जायेगा जिससे अधिक से अधिक संख्या में श्रोता गण उपस्थित होकर लाभ उठायें। इस अवसर पर अमेठी से वैदिक विद्वान् डॉ.ज्वलंत कुमार शास्त्री तथा देहरादून से भजनोपदेशक पं.सतपाल 'सरल' को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया है। आर्य समाज आदर्श नगर की ओर से सभी समाजों के सदस्यों तथा सभी आर्य नर-नारियों को आमंत्रित किया गया है। ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम का समापन होगा। *(सतीश निझावन, मंत्री)*

सम्पादक की डायरी

गृह प्रवेश दि.१२.०६.१४ : गोमती नगर विस्तार स्थित नवनिर्मित शारदा अपार्टमेंट ब्लाक 'ओ', टावर नं.४, फ्लैट नं.८०१ में श्री रोहताश्व एवं श्रीमती अर्चना का गृह प्रवेश वैदिक विधान के अनुसार डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रख्यात वेद विदुषी डॉ.शान्ति देव बाला की कनिष्ठ पुत्री डॉ.मुक्ता छाबड़ा एवं श्री राम प्रकाश छाबड़ा, ब्रिगेडियर अमिताभ, श्री अभिराम के साथ समस्त पारिवारिक जनों एवं इष्ट मित्रों ने यज्ञ में भाग लिया तथा प्रीति भोज का रसास्वादन किया।

शान्ति यज्ञ दि.२०.०६.१४ : श्री दुर्गा प्रसाद सिंह का ७२ वर्ष की आयु में दिनांक १२.०६.१४ को निधन हो गया। आपकी पुण्य स्मृति में शान्तियज्ञ का आयोजन सर्वोदय नगर (इन्दिरा नगर) में प्रख्यात एडवोकेट श्री विष्णु श्रीवास्तव के संयोजन में आयोजित हुआ, जिसमें स्व.सिंह के सुपुत्र अरुण कुमार सिंह(कर्नाटक), राजेश सिंह(अमेरिका) तथा राकेश सिंह(आस्ट्रेलिया) ने सपरिवार भाग लिया तथा अपनी श्रद्धांजलि यज्ञ के माध्यम से अर्पित की। ज्ञातव्य है कि स्व.दुर्गा प्रसाद सिंह एक शिक्षाविद् थे तथा अंडमान, नीकोबार द्वीप समूहों में शिक्षा के प्रसार में उन्होंने महत्त्वपूर्ण सेवाएँ की थीं।

पुण्य स्मृति दि.२५.०६.१४ : ५/७६, विराम खण्ड, गोमती नगर में स्व.रवीन्द्र वर्मा की १३वीं पुण्य तिथि पर वैदिक यज्ञ का आयोजन हुआ। स्व.वर्मा के दोनों पुत्र ईशान एवं निशान्त ने अपनी माताजी के साथ गतवर्षों की भाँति यजमान का आसन ग्रहण किया। साथ ही श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा, श्रीमती वर्मा तथा अखिलेश जी, सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, श्रीमती स्नेह लता, वीना दीक्षित, बिंदिया गुप्ता, रनिता श्रीवास्तव, मधु श्रीवास्तव इत्यादि क्षेत्र के नर-नारियों ने श्रद्धापूर्वक यज्ञ में भाग लिया तथा आचार्य डॉ.वेद प्रकाश आर्य जी के प्रवचन से लाभ उठाया। (संयोजक-राजेन्द्र कुमार वर्मा)

शान्ति यज्ञ दि.२८.०६.१४। यह समाचार बड़े दुःख के साथ पढ़ा जायगा कि श्रीमती वीना शर्मा (भू.पू.प्राचार्या, भारतीय विद्या भवन डिग्री कालेज) का लम्बी बीमारी के बाद २७.०६.१४ को ५७ वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप अपने पीछे शोक संतप्त पतिदेव श्री राजेश शर्मा तथा रोती बिलखती दो पुत्रियों वांछा तथा विस्मया को छोड़ गई हैं। बताते चलें कि स्व.शर्मा अपनी युवा पुत्रियों का चाहते हुए भी विवाह नहीं कर सकीं क्योंकि किसी ज्योतिषी ने कहा था कि २७ वर्ष से पहले पुत्रियों का विवाह न करें।

१०/१७४, इन्दिरा नगर में आपकी पुण्य स्मृति में श्रीमती मालती त्यागी के संयोजन में वैदिक विधि से शान्ति यज्ञ डॉ. वेद प्रकाश आर्य ने सम्पन्न कराया। यज्ञ में दिवंगता के पति तथा पुत्रियों के अलावा श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा (जेट) तथा अन्य अनेक पारिवारिक जनों के अलावा शिक्षाजगत के प्रतिनिधियों ने भाग लिया और श्रद्धांजलि अर्पित की।

वैवाहिक वर्षगाँठ एवं जयन्ती श्रीमती निमिषा वाजपेयी एवं धीरेन्द्र शंकर वाजपेयी की वैवाहिक वर्षगाँठ तथा कु.अनूषा त्रिपाठी (छात्रा एमिटी विश्वविद्यालय) का जन्मदिवस, १६/८३८, इन्दिरा नगर में मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ का अयोजन हुआ। समस्त पारिवारिक जनों ने आशीर्वाद दिया तथा शुभकामनाएँ व्यक्त कीं। प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

आर्य समाज चन्द्रनगर

दिनांक २५.०५.१४ को प्रातः यज्ञ हवन साप्ताहिक सत्संग के उपरान्त, अचार्य वेदव्रत अवस्थी की अध्यक्षता में वर्ष २०१४-१५ के लिए नये पदाधिकारी निम्नप्रकार निर्वाचित किये गये।

श्रीमती स्नेहलता	उप मंत्री
श्री प्रबोध सागर जौहरी	उप मंत्री
श्री राजीव बत्रा	कोषाध्यक्ष
श्री भरतसिंह आर्य	सहकोषाध्यक्ष
श्री मनीष आर्य	सम्परीक्षक
श्री अजय श्रीवास्तव	पुस्तकाध्यक्ष

इसके अतिरिक्त श्री प्रेम शंकर मौर्य–अधिष्ठाता, आर्य वीर दल तथा प्रतिनिधि सभा के लिए प्रतिनिधिगण–सर्वश्री डा.वीरेन्द्र सरस्वती, केवल कृष्ण मलिक, रामगोविन्द ठाकुर, रमेश चन्द्र त्रिपाठी, प्रत्यूषरत्न पाण्डेय।

(रमेशचन्द्र त्रिपाठी, प्रधान)

जिला सभा लखनऊ

दिनांके ८ जुलाई १४ को जिला सभा लखनऊ का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न हुआ, जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गये-

श्री रमेश चन्द्र त्रिपाठी	प्रधान
डॉ.एम.एल.अग्रवाल	उपप्रधान
आचार्य सन्तोष वेदालंकार	उपप्रधान
श्री बृजेश मंगल वाजपेयी	उपप्रधान
श्रीमती आशा अग्रवाल	उपप्रधान
श्री प्रत्यूषरत्न पाण्डेय	मंत्री
श्री नवनीत निगम	संगठन मंत्री
श्री अतुल सिंह	उप मंत्री
श्री राजीव माहेश्वरी	उप मंत्री
श्री यतेन्द्र सिंह	उप मंत्री

जिला एवं प्रान्तीय सभा के लिए प्रतिनिधि–श्री रण सिंह एवं श्री रवि वरमानी।

कार्यकारिणी सदस्य–सर्वश्री महेन्द्रपाल, श्रीमती प्रमिला मलिक, रवि वरमानी, नन्दलाल नारंग, वीरेन्द्र सोवती, श्रीमती सुषमा कुमारी।

(अमिता वरमानी, मंत्री)

चूड़कर्म संस्कार

४१७/१०, नेवाजगंज, चौक, लखनऊ, दि.०३.०७.१४। श्री रामकिशोर तिवारी के सुपौत्र एवं शीलमणि तिवारी के सुपुत्र सम्यक् का चूड़कर्म संस्कार वैदिक विधि से आचार्य वेदव्रत अवस्थी के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज लाजपतनगर चौक के पूर्व प्रधान पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, प्रत्यूषरत्न पाण्डे (मंत्री, जिलासभा, लखनऊ), कवयित्री रमा आर्य, श्री वी.एम.पाण्डेय, इत्यादि पारिवारिक जनों ने बालक को शुभ आशीर्वाद प्रदान किया।

आचार्य को पत्नीशोक

०७.०७.१४। आर्य विद्वान् आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुख्य सम्पादक, आर्यमित्र की जीवन संगिनी देवी शकुन्तला अवस्थी का ०५.०७.१४ को निधन हो गया। आपकी अन्त्येष्टि वैदिक विधि से की गई तथा ०७.०७.१४ को सायं ५ बजे आचार्यजी के निवास स्थान हिन्दनगर में शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ। वक्ताओं ने देवी शकुन्ताल के सौम्य स्वभाव, कार्य कुशलता, कर्तव्य परायणता इत्यादि गुणों की चर्चा करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की तथा दिवंगत आत्मा की शांति-सद्गति हेतु प्रार्थना की।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
'वेदाधिष्ठान' 539क/234, हरीनगर, पो0-इन्दिरानगर, लखनऊ - 226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

E-mail-
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	-	100 रु. वार्षिक
व्रती सदस्य	-	250 रु. वार्षिक
ऋत्विक् सदस्य	-	1,200 रु. वार्षिक
होता सदस्य	-	2,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	-	12,000 रु.
प्रतिष्ठापक	-	50,000 रु.

सहयोग राशि 'बैंक ऑफ बड़ौदा' की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-
खाता धारक - आर्य लोक वार्ता
खाता सं. - 00500 2000 00579
खाते का प्रकार-चालू खाता
बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, हजरतगंज लखनऊ। IFSC code - BARBOHAZARA

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
डॉ (श्रीमती)वीना कटियार, फर्रूखाबाद
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार

संरक्षक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा, राजस्थान
श्रीमती प्रमोद कुमारी, लखनऊ
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
श्री कौशल किशोर श्रीवास्तव, लखनऊ
श्री जगदीश लाल खत्री, लखनऊ
श्रीमती कुसुम वर्मा, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री रघुनाथ सिंह आर्य, कानपुर
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई
शिवशंकर लाल वैश्य, सीतापुर

आवश्यक सूचना

कृपया शिविर कार्यालय के पते का उपयोग करें-
डॉ. वेद प्रकाश आर्य,
प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता
19/838, प्रथम तल, रिंगरोड,
इन्दिरा नगर, लखनऊ-226 016

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-२, हिमांशु सदन, ५-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' ५३९क/२३४ हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

ग्राम ग्राम में नगर नगर में, 'आर्य्य लोक वार्ता' घर-घर में